सुगंध

2025 अंक -13

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय

वार्षिक गृह पत्रिका

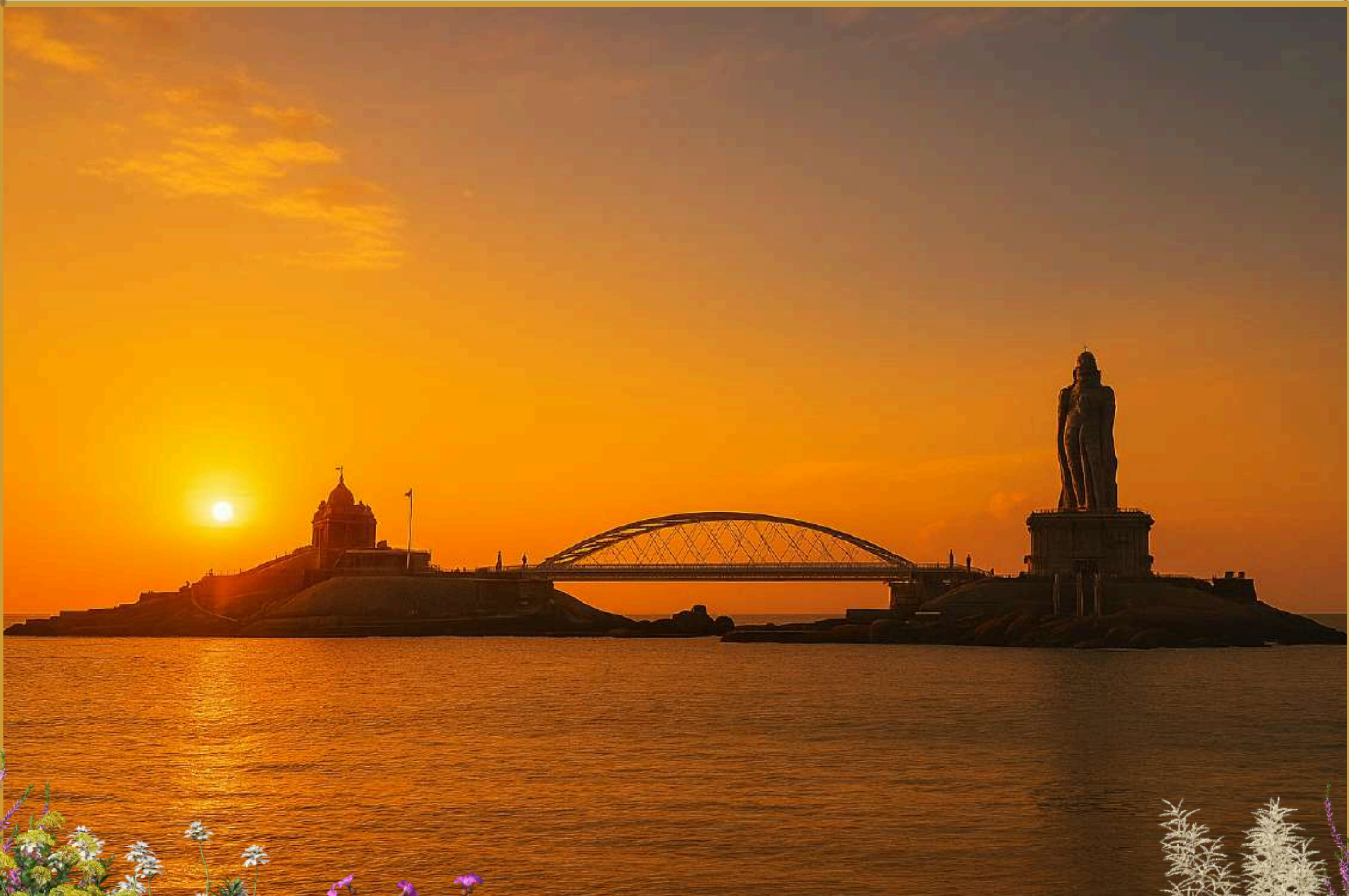

महानिदेशक का संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व की बात है कि हमारे कार्यालय द्वारा 'सुगंध' पत्रिका का तेरहवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति दृढ़ संकल्प एवं रुचि को दर्शाती है।

'भाषा' किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और परंपरा का प्रतीक होती है। भारत एक बहुभाषी देश है; अन्य सभी भारतीय भाषाओं की तरह 'हिंदी' भी इसकी संस्कृति, सभ्यता और आत्मा में गहराई से समाई हुई है। इसका कारण इसकी सहज, सरल, सुबोध और प्रवाहमयी प्रकृति है। हमारे कार्यालय में, 'सुगंध' पत्रिका ने इस दिशा में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस पत्रिका में कार्यालय कर्मचारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए रोचक और ज्ञानवर्धक लेख शामिल हैं। इस प्रकार के योगदान से, यह कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ावा देता है। मुझे आशा है कि 'सुगंध' के इस अंक के माध्यम से पाठकों को हिंदी के विभिन्न पहलुओं, जैसे तकनीकी, प्रशासनिक और साहित्यिक पहलुओं से परिचित होने का अवसर मिलेगा।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं इससे जुड़े सभी लेखकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई, तथा पत्रिका की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

उप निदेशक का संदेश

"सुगंध" के इस नए अंक के माध्यम से आप सबसे रूबरू होते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने हेतु यह एक सशक्त कदम है। हम सभी का यह सवैधानिक दायित्व है कि कार्यालय के कार्यों में सहज हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें जिससे हिंदी की तीव्रगति संभव हो सके ।

हिंदी भाषा की गहराई, सरलता और समृद्धि ही उसे विशिष्ट बनाती है। हिंदी ने समय-समय पर साहित्य, कला, विज्ञान और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना अपार योगदान दिया है। और इसी गौरवशाली भाषा के संरक्षण और प्रसार के लिए आज हम तेरहवें अंक का विमोचन कर रहे हैं।

यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, हमारी सोच और हमारे विचारों का दर्पण है। इसमें साहित्यिक रचनाएँ, सांस्कृतिक आलेख, समसामयिक विषय, विज्ञान, स्वास्थ्य, और समाज से जुड़े विविध पहलुओं को सम्मिलित किया गया है, ताकि यह प्रत्येक पाठक के लिए ज्ञान और मनोरंजन का स्रोत बन सके।

हमें गर्व है कि इस माध्यम से हम हिंदी को न केवल संरक्षित करेंगे, बल्कि इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने का भी प्रयास करेंगे। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अपनी भाषा को बढ़ावा दें, उसे जीवित रखें और उसके विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले समस्त लेखकों, संपादकों और सहयोगियों को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। साथ ही मैं आप सभी पाठकों से आग्रह करता हूँ कि इस पत्रिका को अपनाएँ, पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया से हमें इसे और बेहतर बनाने में मार्गदर्शन करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर बधाई एवं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जे. शंकर राम

उप निदेशक/ प्रशासन एवं सी ई

उप निदेशक का संदेश

" यह अत्यंत हर्ष की बात है कि “सुगंध” का 13 वाँ अंक आपके सामने प्रस्तुत है। चेन्नै “ग” क्षेत्र में आता है। इसके बावजूद हमें रचनाएँ मिलती हैं और हर वर्ष हम विभिन्न लेखों के साथ एक सुंदर गुलदस्ता प्रस्तुत करते हैं, जिसकी सुगंध सारे भारत में फैलती है । आज का युग तेज़ी से बदल रहा है। मूल्यों के अर्थ भी साथ में बदल रहे हैं।

आधुनिकता के साथ - साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत भी धूमिल होती जा रही है । ऐसे में “सुगंध” पत्रिका अपने सकारात्मक और रुचिकर लेखों के साथ हमारी परंपराओं और संस्कृति को जीवंत रखने का प्रयास कर रही है। आइए, इस सुगंध भरी यात्रा में हम सब मिलकर चलें और अपने जीवन को सुंदरता और खुशबू से भर दें। हिंदी भारत की आधिकारिक भाषा है । कार्यालय के अलावा रोज़मर्रा की जिंदगी में भी हिंदी भाषा का प्रयोग कर हमें हिंदी के गौरव को बनाए रखना होगा ।

वी.एस. रेड्डी, आई ए एवं ए एस

उप निदेशक (सी एस/जी एस टी)-1

संपादकीय

डॉ एस सुधावल्ली
सहायक निदेशक/राजभाषा

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका " सुगंध " के 13वें अंक के प्रकाशन में अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति इस कार्यालय के कार्मिकों की सृजनात्मकता का एक दर्पण है। राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार में इस कार्यालय के पदधारियों के उत्साह को भी यह पत्रिका उजागर करती है। हमें अपने 12 वें संस्करण के लिए इतने सारे कार्यालयों से मिली सराहना से वाकई बहुत खुशी हुई। इसी प्रोत्साहन के साथ, हम इस पत्रिका के 13वें संस्करण की ओर बढ़ रहे हैं।

जिस तरह एक पुष्पित-पल्लवित कुसुम की सुगंध चहु-दिशाओं को सुगंधित करती है, उसी प्रकार " सुगंध" पत्रिका को भी सुसज्जित करने का एक विनम्र प्रयास यहाँ किया गया है। विभिन्न विधाओं के साथ सभी प्रमुखों के आशीर्वचन एवं कार्यालय की अन्य गतिविधियों को भी समेकित किया गया है ।

इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन में कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गणों का सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है। मैं, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ । पत्रिका के प्रकाशन में उचित मार्गदर्शन देने वाले "सुगंध" परिवार के संरक्षक महानिदेशक महोदय, उप निदेशक (प्रशासन एवं सी ई), उप निदेशक (सी एस/जी एस टी-1) महोदया व अन्य अधिकारियों का मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूँ।

अंत में, हिंदीतर क्षेत्र से प्रकाशित इस पत्रिका में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मेरा हार्दिक आभार । आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप लोग अपनी लेखनी से "सुगंध" को आभूषित करेंगे और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य में सहयोग सदैव देते रहेंगे।

हिन्दी दिवस 2024

सुगंध परिवार

संरक्षक

श्री को. प. आनन्द

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)चेन्नै

मार्गदर्शक

जे. शंकर राम/ उप निदेशक

श्रीमती वी. एस. रेड्डी/ उप निदेशक

संपादक मंडल

सुश्री वी.एस. रेड्डी, उप निदेशक (सी एस & जीएसटी-।)

श्री ए. राजू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजलक्ष्मी रंगनाथन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

डॉ. एस. सुधावल्ली, सहायक निदेशक(राजभाषा)

श्रीमती अन्नपूर्णा वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

1	आवरण पृष्ठ की प्रासंगिकता	महानिदेशक की लेखनी से
2	आपके पत्र	
3	अच्छाई और बुराई दूसरों से नहीं मिलती	ए. राजू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
4	दादी माँ	एम.बी. संपतकुमार,पर्यवेक्षक
5	विशाखापट्टनम की यात्रा	के. जी. कृष्ण सिरि/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6	चेन्नई शहर	बेलाल अहमद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7	आखिर कब तक	वी. सुललिता रेड्डी, उप निदेशक
8	संघर्ष में साहस	आर. संदीप सिंह(अर्चना प्रजापति /सलेपअ के पति)
9	ऑपरेशन सिंदूर	आर. संदीप सिंह(अर्चना प्रजापति /सलेपअ के पति)
10	एक संयोग एक आह्वान:ई सी आर स्थित जगन्नाथ मंदिर की यात्रा	संजोय घोष/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11	भाषा विकास	डॉ एस. सुधावल्ली/ सहायक निदेशक(राजभाषा)
12	बचपन की यादें	शशिकांत कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
13	आज का परिदृश्य	शशिकांत कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14	ओडिशा का रत्न-देवमाली	संजोय घोष/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
15	जब आकाश टूटा, और मैं उठा	सौमाल्य सेन/ लेखापरीक्षक
16	स्वर्णिम भारत – विरासत और विकास	अभिषेक कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
17	एक पन्ना सरकारी बाबू की डायरी से	अभिषेक कुमार/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
18	दामाद की दृष्टी से	दीपक साहू, वी. सुललिता रेड्डी, उप निदेशक के दामाद
19	कन्याकुमारी का त्रिवेणी संगम	डॉ एस. सुधावल्ली/ सहायक निदेशक(राजभाषा)
20	बॉम्बे में टेलर स्विफ्ट: जादू, संगीत और मंत्रमुग्ध कर देने वाले पलों की एक रात	अजय यादव/ डी ई ओ
21	वानखेड़े में सचिन तेंदुलकर का आखिरी टेस्ट: एक क्रिकेट दिग्गज को विदाई	सव्यसाची भगत / वरिष्ठ लेखापरीक्षक
22	चेन्नई से तंजावुर तक एक यादगार पारिवारिक यात्रा: समृद्ध विरासत और सुंदरता की खोज	के. सुगुमारन / वरिष्ठ लेखापरीक्षक
23	मेरे प्रिय लेखक	दीपा सिंह/ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
24	मेरी बिटिया, मेरी जान है	अन्नपूर्ना वर्मा/वरिष्ठ अनुवादक
25	कल्याण गतिविधियाँ	
26	खेल सितारे	

आवरण पृष्ठ की प्रासंगिकता

महानिदेशक की लेखनी से

आमतौर पर यह देखा गया है कि गैर-हिंदी भाषी राज्यों में नियुक्त और तैनात केंद्र सरकार के पदधारियों को अक्सर स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा सीखने में कठिनाई होती है और कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इससे कर्मचारियों के साथ मेलजोल में समस्याएँ आती हैं और इसलिए उन्हें अपने-अपने राज्यों से दोस्त ढूँढ़ने पड़ते हैं। इससे उनके बीच भाषा संबंधी बाधा उत्पन्न होती है, साथ ही प्रशासनिक दृष्टिकोण पर भी, जब उन्हें लेखा परीक्षा दलों में तैनात किया जाता है, जहाँ उन्हें क्षेत्रीय भाषा में फाइलों की समीक्षा करनी होती है और केवल उसी भाषा को बोलने वाले लोगों से बातचीत करनी होती है। हालाँकि गैर-क्षेत्रीय भाषा बोलने वाले अधिकारियों के लिए क्षेत्रीय भाषा की कक्षाएं अनिवार्य हैं, फिर भी उन्हें स्थानीय भाषी लोगों के साथ तालमेल बिठाना बहुत मुश्किल लगता है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए, उन्हें क्षेत्रीय भाषा सीखनी चाहिए और तकनीकी, प्रशासनिक और आधिकारिक स्तर पर सफल होने की चुनौतियों को कम करना चाहिए। इससे राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त होता है और सहकर्मियों के बीच सांस्कृतिक अंतर कम होता है।

राजभाषा कार्यान्वयन का एक घटक यह है कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों को सूचना पट्ट पर अंग्रेजी शब्द का हिंदी पर्याय प्रदर्शित करना चाहिए। हमारा कार्यालय एक कदम और आगे बढ़कर, एक अंग्रेज़ी शब्द को उसकी समतुल्य हिंदी और तमिल प्रशासनिक शब्दावली के साथ लिप्यंतरण सहित लिखता है। इससे परिसर में हमारे अधिकारियों के लिए प्रशासनिक शब्दावली से परिचित होने का मार्ग प्रशस्त होता है, जिसमें उसके तमिल समतुल्य भी शामिल हैं। कई अधिकारियों ने इसे अत्यधिक उपयोगी पाया है और क्षेत्रीय भाषा सीखने के लिए उत्सुक हैं। यह एक उचित प्रयास है जो अधिकारियों को क्षेत्रीय भाषा समझने में सक्षम बनाता है और अन्य राज्यों से भर्ती किए गए कर्मचारियों के लिए भी यह सहायक है।

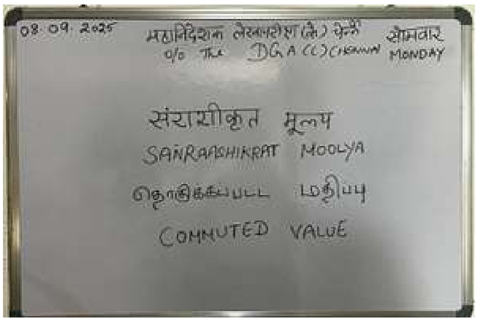

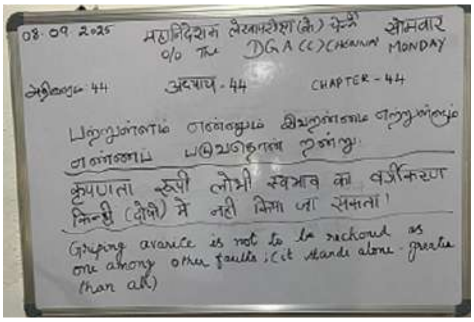

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमारे कार्यालय द्वारा उठाया गया एक और उल्लेखनीय कदम यह है कि हर हफ्ते, प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर द्वारा रचित "तिरुक्कुरल" को हिंदी और अंग्रेजी में अर्थ के साथ सूचना पट्ट पर लिखा जाता है।"तिरुक्कुरल", या संक्षेप में कुरल, आम लोगों की नैतिकता पर एक उत्कृष्ट तमिल भाषा का ग्रंथ है, जिसमें सात-सात शब्दों के 1,330 छोटे दोहे हैं। यह तीन खंडों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक में सद्गुण, धन और प्रेम पर सूत्रात्मक शिक्षाएँ हैं।

तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवरूर का दौरा करते समय मैं विस्मित हुआ, जहाँ मुझे एक दैनिक डेस्क कैलेंडर मिला जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर अंग्रेजी और हिंदी दोनों में "तिरुक्कुरल" अंकित था।

"तिरुक्कुरल" के महत्व को उजागर करने के लिए, कन्याकुमारी में तिरुवल्लुवर प्रतिमा और विवेकानंद शिला को जोड़ने वाले काँच के पुल को हिंदी पत्रिका “सुगंध” के 13वें संस्करण के आवरण पृष्ठ के रूप में चुना गया है।

कर्मचारी स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम

24.04.2024 को चेन्नई में डॉ. प्रभाकरन द्वारा मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम ।

श्रीमती लता सुंदर, कल्याण अधिकारी ने मानसिक जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री डी.के. शेखर, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने डॉ. प्रभाकरन, मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ का स्वागत किया। डॉ. प्रभाकरन ने पदधारियों के बीच मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता पर भाषण दिया ।

आपके पत्र

प्रति वर्ष हिंदी दिवस समारोह के दौरान विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त सर्वोत्तम प्रशंसित लेखों को तीन पुरस्कार वितरित किए जाते हैं, जिन कार्यालयों ने अपना बहुमूल्य समय निकालकर हमारे लेखों की सराहना की, उनके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "सुगंध" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय है। विशेष रूप से:- सुश्री वंगला सुललिता रेड्डी का लेख 'सुगंध', सुश्री दीपा सिंह का लेख 'द मिसाइल मैन', श्री राहुल साव का लेख 'मेरी बेटी', श्री बिरेन्द्र कुमार यादव की कविता 'जो प्राप्त है , वो पर्याप्त है', सुश्री विजयेता साव गुप्ता की कविता 'आसान है क्या' प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
(उदय प्रताप सिंह)/हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका सुगंध का 12 वाँ अंक इस कार्यालय को प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक पठनीय एवं प्रशंसनीय है, राजभाषा पी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका की उत्तम संयोजन एवं संपादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार
(ले व ह) उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंध' के '12' अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'सुगंध' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया
हिन्दी अधिकारी
प्रमले(ले व ह) केरल

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय), चेन्नै के कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "सुगंध" के 12वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"सुगंध" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,/
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
असम

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "सुगंध" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय है। विशेष रूप से:- सुश्री वंगला सुललिता रेड्डी का लेख 'सुगंध', सुश्री दीपा सिंह का लेख 'द मिसाइल मैन', श्री राहुल साव का लेख 'मेरी बेटी', श्री बिरेन्द्र कुमार यादव की कविता 'जो प्राप्त है , वो पर्याप्त है', सुश्री विजयेता साव गुप्ता की कविता 'आसान है क्या' प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(उदय प्रताप सिंह)/हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंध' के '12' अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'सुगंध' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

हिन्दी अधिकारी

प्रमले(ले व ह) केरल

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका सुगंध का 12 वाँ अंक इस कार्यालय को प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक पठनीय एवं प्रशंसनीय है, राजभाषा पी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका की उत्तम संयोजन एवं संपादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार

(ले व ह) उत्तराखण्ड

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय), चेन्नै के कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "सुगंध" के 12वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"सुगंध" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,

मौसमी चौधरी,

हिन्दी अधिकारी,/

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

असम

अच्छाई और बुराई दूसरों से नहीं मिलती
தீதும் நன்றும் பிறர்தர வாரா

WE ARE RESPONSIBLE FOR OUR OWN SUCCESS OR FAILURE, NOT OTHERS!

ए. राजू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कणियन पूंगुंड्रनार छठी शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी के बीच संगम युग के दौरान रहते थे। उनका जन्म और पालन-पोषण तमिलनाडु के शिवगंगा जिले की एक ग्राम पंचायत महिबालनपट्टी में हुआ था। उनके द्वारा रचित पद, "पुरनानूरु" (192) एवं "नट्रिणै"(226) में शामिल है।

इस पद की शुरुआत में, वे कहते हैं कि चूँकि इस दुनिया में हर कोई किसी न किसी तरह से संबंधित है (கேளிர்), सभी लोगों को समान अधिकार और समान मूल्य दिए जाने चाहिए। निम्नलिखित भागों में जो कहते हैं 'தீதும் நன்றும் பிறர்தர வாரா' 'तीदुम नंड्रुमम पिरर्तर(अ) वारा', जिसका अर्थ है कि अच्छाई और बुराई व्यक्ति के अपने कर्मों का ही परिणाम है और दूसरों की गतिविधियों या इरादों से नहीं आती है।

इस कवि के उक्त पद और उनके दर्शन से प्रेरित होकर, मैं भाषा के बारे में लिखने के लिए प्रेरित हुआ और यह भी कि हमें इसका प्रयोग कितनी लगन एवं निष्ठा से करना चाहिए।

आदिमानव को अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए एक उपकरण की आवश्यकता थी। वह अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए सांकेतिक भाषा का उपयोग और ध्वनियों का उपयोग करता था। जैसे-जैसे मनुष्य का विकास हुआ, उसकी ध्वनियाँ शब्द, पंक्तियाँ और वाक्य बन गईं। इसी उपकरण को बाद में भाषा के रूप में पहचानने लगा। यह उपकरण दुनियाँ के हर हिस्से में विभिन्न कारणों से विकसित हुआ है, जैसे कि प्रत्येक स्थान का प्राकृतिक वातावरण और उससे संबंधित लोगों की ज़रूरतें।

इसलिए, भाषा, अन्य वैज्ञानिक खोजों की तरह, मानव जीवन को आसान बनाने के लिए बनाया गया एक उपकरण है। जिस तरह हम अपनी ज़रूरतों के लिए उपकरणों का उपयोग करते हैं, उसी तरह हमें भाषा का भी उपयोग करना आवश्यक है। इसीलिए जब हम एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं, तो भाषा हमारे काम को आसानी से पूरा करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग की जाती है।

हालाँकि, कुछ भाषा बोलने वाले, भाषा की इस प्रकृति को समझे बिना, भाषाओं में मतभेद पैदा करते हैं और लोगों के बीच विविधता पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। वे दूसरी भाषा सीखने का विरोध करते हैं और अपनी भाषा के अलावा अन्य भाषाओं के बारे में उदार विचार व्यक्त करते हैं। वे यह मानने से इनकार करते हैं कि यह सब उनकी भाषा बोलने वालों के विकास के विरुद्ध है।

सच है। प्रत्येक भाषा के विकास के लिए कई अध्ययन/शोध किए जाते हैं। यह मानव स्वभाव है। पाषाण युग में शुरू हुआ मानव अनुसंधान, आज परिशुद्ध औज़ारों तक पहुँच गया है और अभी भी जारी है। चूँकि भाषा भी एक उपकरण है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बहुत से लोग इस पर शोध करते हैं।

जैसे हम दुनियॉ के अन्य हिस्सों में शोधित और परिष्कृत औज़ारों का बिना किसी हिचकिचाहट के उपयोग करते हैं और वे हमें न तो लाभ पहुँचाते हैं और न ही हानि पहुँचाते हैं, वैसे ही अपनी ज़रूरतों के अनुसार अन्य भाषाओं के औज़ारों का उपयोग करने में न तो लाभ है और न ही हानि। दुनियॉ की अन्य कलात्मक निधियों को यहाँ लाकर जोड़ने में ही भलाई है, बुराई उनको विरोध करने में है।

इस कवि के उक्त पद और उनके दर्शन से प्रेरित होकर, मैं भाषा के बारे में लिखने के लिए प्रेरित हुआ और यह भी कि हमें इसका प्रयोग कितनी लगन एवं निष्ठा से करना चाहिए।

विरोध वह है जो हम स्वयं उत्पन्न करते हैं, वह बुराई जो हम स्वयं अपने ऊपर लादते हैं। भलाई और बुराई दूसरों से नहीं आती।

दिनांक 18.06.2024 से 21.06.2024 तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

श्री को.प. आनंद, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), श्री डी. जयशंकर, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तमिलनाडु, श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तमिलनाडु एवं पुदुचेरी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। योग गुरु तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के विभागाध्यक्षों, वर्ग अधिकारियों, अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच योग के लाभों पर व्याख्यान दिया एवं पदधारियों के बीच योग आसन और उसके लाभ को समझाया और योग विशेषज्ञों द्वारा स्टाफ सदस्यों के बीच योग आसन का प्रदर्शन किया गया।

दादी माँ

एम.बी. संपतकुमार
पर्यवेक्षक

जैसे ही मैं इस अद्भुत दुनिया में आया
जैसे कोई अनजान जहाज फंस गया हो
चारों ओर की चमक की एक झलक पाते हुए
सभी अजीबोगरीब आवाज़ें सुनकर
मैं खुद को धरती पर सुरक्षित पाया
मेरी दादी माँ की स्नेह भरी बाहों में
जो मेरे जन्म का जश्न मनाते हुए मुस्कुरा रही ।

बेहद प्यार से, वह मुझे पालने में लिटाती
लोरियाँ गुनगुनाते हुए ,
मेरे रोने को रोकती और मुझे सुला देती
खुद जागती रहती थी सोए बिना मेरी दादी माँ
उसकी प्यारी बाहें हमेशा मेरे साथ रहती
प्यार और दुलार से मुझे खुश रखने के लिए ।।

वह मुझे टहलाने ले जाती,
और मुझसे बात करती ,
उन सभी दृश्यमान आँखों के लिए जो चमकती
हम बस एक अविभाज्य जोड़ी थे
स्वादिष्ट भोजन, वह बनाती
अनमोल हैं वे पल जो हम साझा करते
कहानियों और बातों से मेरे दिन को बनाती
बहुत प्यार करता हूँ मैं अपनी दादी से ।

बड़ा हो गया मैं और देखा दादी को कमज़ोर होते हुए
काँपते हाथ और कमज़ोर आवाज़ जो साथ नहीं दे पाई
सिर हिलाते हुए, जो मैं कहता हूँ उसे सुनने में असमर्थ थी
मैं उनका हाथ थामकर उन्हें रास्ता दिखाता
मेरे दिल का वो प्यारा अस्तित्व
अब एक फीकी रोशनी की तरह सिकुड़ रही ।

मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि उनका सारा प्यार लौटा रहा
उनके छोटे-छोटे कदमों की देखभाल करते हुए
मैं उन्हें आरामदायक बिस्तर पर लिटाता हूँ
आँसुओं से लड़ता हूँ जो मेरी आँखों में भर आते हैं
अपनी दादी को जाने नहीं देना चाहता
अपनी नम आँखों की सीमा से परे।

विशाखापट्टनम की यात्रा

के. जी. कृष्ण सिरि
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दिसंबर 2023 में, दोस्तों से जानकारी प्राप्त करने के बाद, हमने वंजंगी पहाड़ियों की यात्रा की योजना बनाई। ये पहाड़ियाँ विशाखापट्टनम शहर से लगभग 125 किलोमीटर दूरी पर थीं, इसलिए हमने 4 दिन की यात्रा की योजना बनाई। हमने शाम 7.00 बजे चेन्नई से हावड़ा मेल लिया और अगले दिन सुबह 08.00 बजे विशाखापट्टनम पहुँचे। विशाखापट्टनम एक बहुत ही सुंदर और स्वच्छ शहर है। हमने अपनी यात्रा के पहले दिन निम्नलिखित स्थानों का दौरा किया:

कैलाशगिरि, विशाखापट्टनम की राजसी पहाड़ियों के ऊपर स्थित एक आश्चर्यजनक पार्क है। जैसे ही हम पहाड़ी पर चढ़ते हैं, यह महसूस होता है कि हम शहर की हलचल को पीछे छोड़कर, एक नई दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। हर मोड़ के साथ, विचार अधिक से अधिक सुदृढ़ होते जाते हैं, और जैसे-जैसे आप शीर्ष पर पहुँचते हैं, आप यहाँ के भव्य दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यह पार्क विशाखापट्टनम महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण द्वारा विकसित किया गया है। यह 380 एकड़ भूमि वनस्पतियों और उष्णकटिबंधीय पेड़ों से ढकी हुई है। 173 मीटर (568 फीट) पर स्थित इस पहाड़ी से हम पूरा विशाखापट्टनम शहर देख सकते हैं।

इस पहाड़ी पर दो प्रतिष्ठित मूर्तियाँ हैं जो विशाखापट्टनम की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन गई हैं। 40 फीट ऊंची विशाल शिव-पार्वती प्रतिमा और 20 फुट लंबे भगवान विष्णु के पवित्र शंख और सुदर्शन चक्र की मूर्ति आध्यात्मिक शांति की भावना को उजागर करती है। हम सड़क, वॉकवे और रोपवे के माध्यम से इस अद्भुत पार्क तक पहुँच सकते हैं।दो पैदल यात्री सीढ़ियाँ हैं। एक अनूठी विशेषता रोपवे है जो पहाड़ी की तलहटी से कैलाशगिरी तक चलती है।

टाइटैनिक व्यू प्वाइंट और टॉय ट्रेन में पहाड़ियों के चारों ओर यात्रा, इसके मनोरंजन पार्क की सवारी, खेल के मैदान और पर्याप्त खुले स्थान को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस पार्क की यात्रा सभी के लिए यादगार रहेगी।

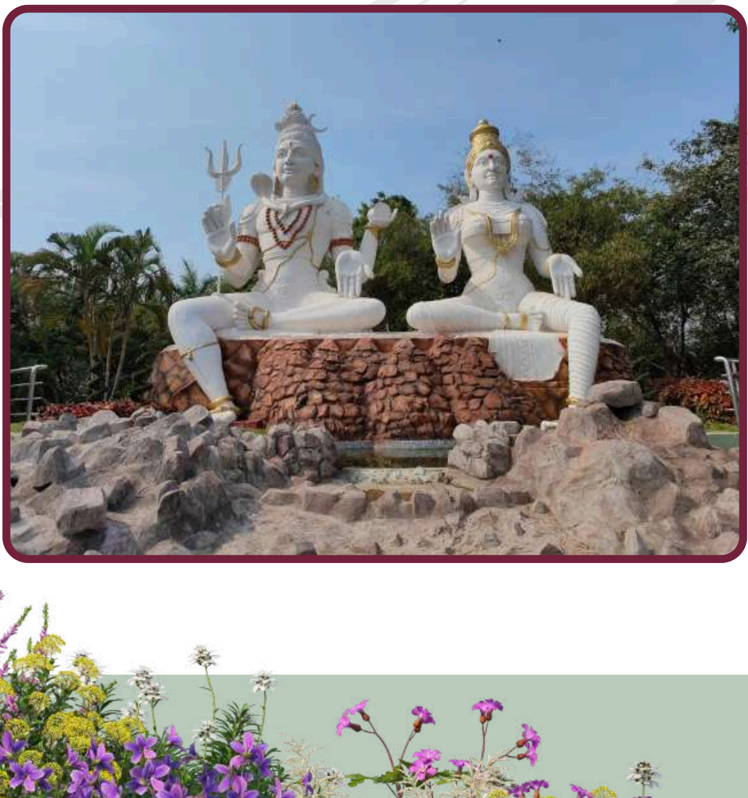

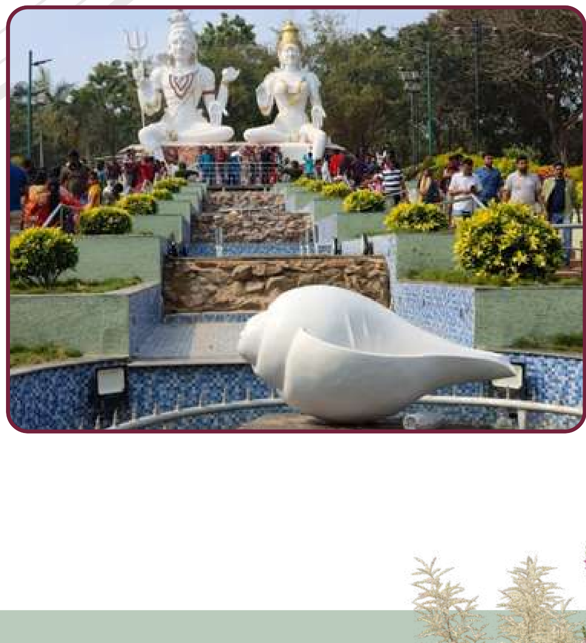

टीयू 142 नेवल एयरक्राफ्ट म्यूजियम

विशाखापत्तनम में विमान संग्रहालय, आपके लिए विमान के बारे में जानने के लिए एक उचित स्थान है। यह संग्रहालय राम कृष्ण बीच रोड पर स्थित है और यह लोगों को, अतीत में उपयोग किए जाने वाले एक पुराने भारतीय नौसेना विमान के इतिहास को जानने का एक अनोखा अवसर है।

यह स्थान 2017 में एक संग्रहालय के रूप में शुरू किया था। यह सोवियत युग के टीयू-142 मीटर विमान को दर्शाता है जिसने अपनी 30,000 की दुर्घटना उड़ान- यात्रा करते हुए भारतीय नौसेना में 29 वर्षों तक राज किया। विमान को बाद में विशाखापट्टनम के समुद्र तट पर स्थित एक संग्रहालय में विघटित कर दिया गया, जिससे यह एक पर्यटक आकर्षण बन गया। संग्रहालय के प्रदर्शनी हॉल में उत्तरजीविता किट, इंजन, डेटा रिकॉर्डर, प्रोपेलर, पनडुब्बी रोधी मिसाइल और सोनोबुय जैसे पुराने उपकरण शामिल हैं। उपकरण को बेहतर ढंग से समझने में आपकी मदद करने के लिए, संग्रहालय अधिकारियों ने विस्तृत जानकारी प्रदर्शित की है। आपको विमान के अंदर तस्वीरें लेने के लिए अनुमति नहीं है, हालांकि, आप संग्रहालय की तस्वीरें ले सकते हैं। टीयू 142 नेवल एयरक्राफ्ट म्यूजियम में वयस्कों के लिए 70 रुपये और बच्चों के लिए 40 रुपये का प्रवेश शुल्क है, जिसमें मुफ्त ऑडियो गाइड भी शामिल है। आप सप्ताह के सभी दिनों में संग्रहालय का दौरा कर सकते हैं।

आईएनएस कुरुसुरा पनडुब्बी संग्रहालय

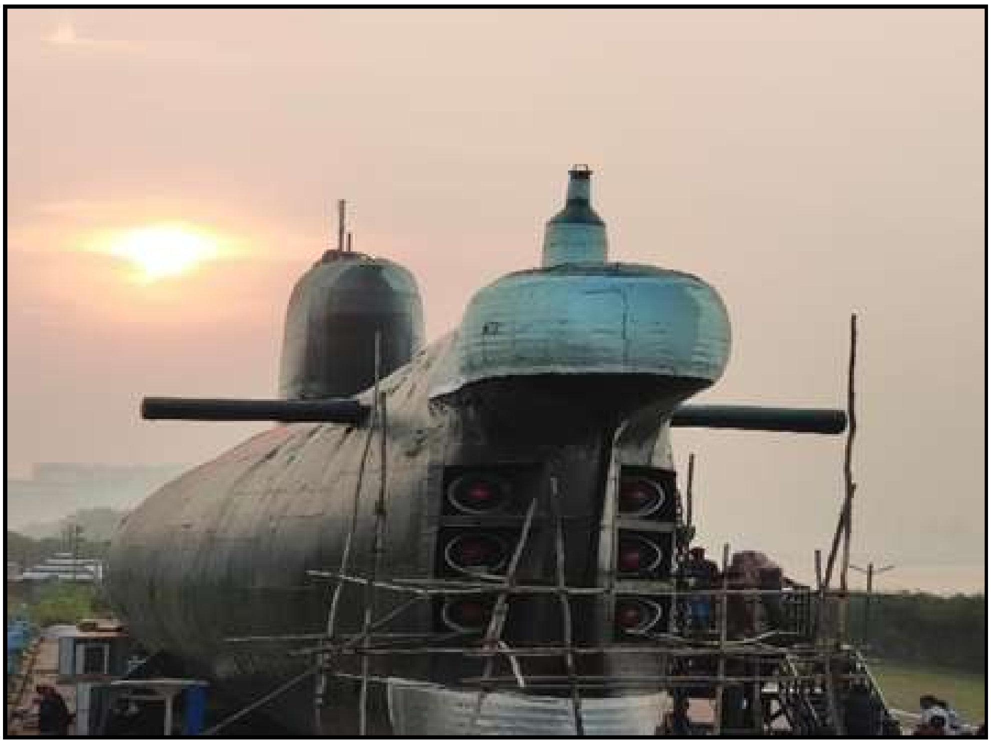

आईएनएस कुरुसुरा पनडुब्बी संग्रहालय एक और म्यूजियम है जिसे आप विमान संग्रहालय की यात्रा के बाद देखने की योजना बना सकते हैं। यह इतिहास प्रेमियों के लिए पनडुब्बियों में मानव जीवन के बारे में विस्तार से जानने का एक अद्भुत मौका है।टीयू 142 नौसेना विमान संग्रहालय से कुछ ही कदम की दूरी पर रामकृष्ण समुद्र तट है। 1996 में निर्मित, विक्ट्री एट सी वॉर मेमोरियल हमारे देश के लिए अपनी जान गंवाने वाले सैनिकों को सम्मान और श्रद्धांजलि देने का एक गंतव्य स्थल है। देश के प्रति सैनिकों के योगदान को श्रद्धांजलि देने के लिए लोग यहाँ आते हैं।

आईएनएस कुर्सुरा पनडुब्बी ने वर्ष 1969 से 31 गौरवशाली वर्षों तक भारतीय नौसेना में सेवा की। अंततः 2001 में इसे विघटित कर दिया गया। I-641 क्लास सोवियत निर्मित डिजाइन वाला यह पनडुब्बी रामकृष्ण बीच रोड, गजपति राजू मार्ग पर स्थित है। इस पनडुब्बी में जो संग्रहालय है, वह लगभग 6 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया था।आईएनएस कुर्सुरा पनडुब्बी को केवल कुछ परिरक्षक परिवर्तनों के साथ संग्रहालय के रूप में इसके मूल डिज़ाइन के साथ ही रखा गया है।

इसका रखरखाव आंध्र प्रदेश के युवा उन्नति, पर्यटन और सांस्कृतिक विकास विभाग द्वारा किया जाता है। सेवानिवृत्त नौसेना कर्मियों को संग्रहालय के गाइडों और क्यूरेटरों के काम पर रखा गया है। आईएनएस कुर्सुरा पनडुब्बी का इस्तेमाल भारतीय नौसेना ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में गश्त के लिए भी किया था। आईएनएस कुर्सुरा पनडुब्बी की ऊंचाई 11.2 मीटर है। पनडुब्बी संग्रहालय प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से खुलता है। यदि आप सुबह आना चाहें तो यह रविवार को सुबह 10 बजे खुलता है। हमारी यात्रा का पहला दिन रामकृष्ण समुद्र तट पर सूर्यास्त के साथ समाप्त हुआ।

यात्रा का दूसरा दिन

हम किरंदुल एक्सप्रेस 08551 (विशाखापत्तनम से किरंदुल) में विशाखापत्तनम से अराकू घाटी में स्थित बोर्रा गुफाओं के लिए निकले। किरंदुल एक्सप्रेस में विस्टाडोम कोच हैं। इस कोच में लगी काँच की खिड़कियों से आसपास के मनोरम दृश्य को देखा जा सकता है। एक तरफ घाटी और दूसरी तरफ पहाड़, सुरंगों और झरनों के बीच से इस यात्रा का सफर बहुत ही रोमांचक है।

बोर्रा गुफाएं

विशाखापत्तनम से 88 किलोमीटर दूर स्थित बोर्रा गुफाएँ अराकू घाटी में अनंतगिरी पहाड़ियों के शिखर पर स्थित हैं। लगभग 705 मीटर की ऊँचाई पर स्थित ये चूना पत्थर की गुफाएँ भारत की सबसे बड़ी गुफाओं में से एक हैं, जो दो वर्ग किलोमीटर में फैली हुई हैं। गुफाओं की खोज के बारे में कई आदिवासी कहानियाँ हैं। एक लोकप्रिय कहानी बताती है कि गुफाओं के ऊपर चरने वाली एक गाय गलती से छत के एक छेद से गिर गई। जब चरवाहे ने खोई हुई गाय की तलाश की, तो उसने गुफाओं पर ठोकर खाईं। अंदर, उसे एक लिंग रूपी पत्थर मिला, जो कि भगवान शिव का एक रूप माना जाता है, उसे विश्वास था कि भगवान ने गाय की रक्षा की है। इस कहानी को सुनकर, ग्रामीणों ने गुफा के बाहर भगवान शिव के लिए एक छोटा सा मंदिर बनवाया। स्थानीय भाषा में इसे बोर्रा गुहालु के नाम से जाना जाता है, जहाँ तेलुगु में 'बोरा' का अर्थ पेट और 'गहलु' का अर्थ 'गुफाएँ' है । ये गुफाएँ भारत का अद्वितीय प्राकृतिक अजूबा हैं। 80 मीटर तक की गहराई तक पहुँचने पर बोर्रा गुफाएँ एक अलौकिक अनुभव प्रदान करती हैं। गुफाएँ हलोजन लैंप से रोशन हैं, लेकिन वे अंधेरे को दूर नहीं करती हैं जिससे रोमांच पैदा होता है।

चूंकि यह छुट्टियों का समय था, इसलिए यातायात के कारण हमें बोर्रा गुफाओं से अराकू तक पहुंचने में 6 घंटे लग गए। हम शाम 7 बजे अराकू पहुंचे। इस कारण से हम अराकू में कटिकी झरना, कॉफी बागान, जनजातीय संग्रहालय और अन्य स्थानों की यात्रा नहीं कर सके।लेकिन हम भाग्यशाली थे कि हमें अराकू आदिवासी नृत्य - धिमसा देखने को मिला।

यात्रा का तीसरा दिन/वंजंगी पहाड़ियाँ

हमने सुबह 3.30 बजे कार से अराकू से वंजंगी की यात्रा शुरू की। तापमान लगभग 6 डिग्री सेल्सियस था और दूरी लगभग 50 किलोमीटर । पूर्वी घाट पर उचित रोशनी के बिना उबड़-खाबड़ सड़कों से यात्रा करना एक रोमांचकारी अनुभव था। हम सुबह 5 बजे वंजंगी की तलहटी में स्थित पाडेरू गांव पहुंचे।

पहाड़ी की तलहटी से पहाड़ी की चोटी तक पहुंचने के लिए 7 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ती है। पहले चार किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए ऑटो और जीप की सुविधा उपलब्ध है। सुबह 5.45 बजे तक हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये।

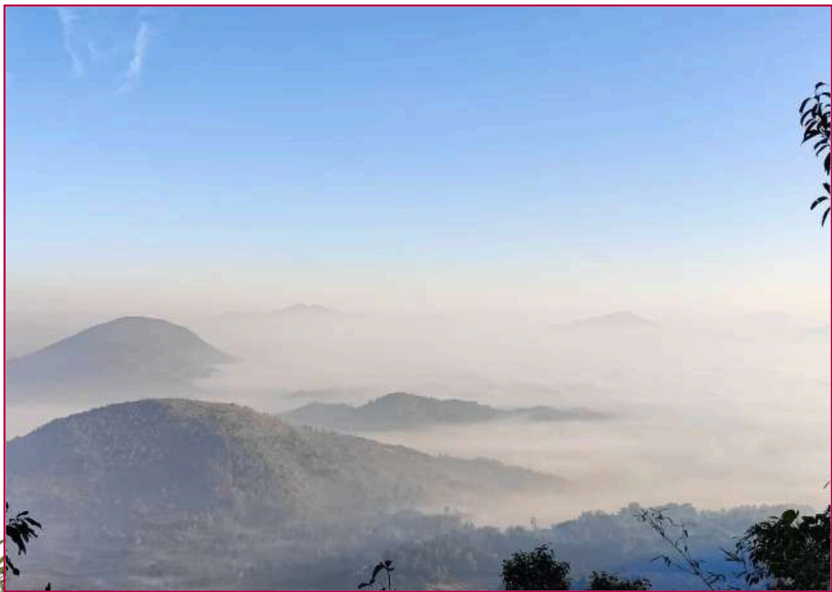

औसत समुद्र तल (MSL) से 3,400 फीट ऊपर स्थित, वंजंगी पहाड़ियों से सूर्योदय का सबसे सुंदर नज़ारा देखने को मिलता है। इस नए खोजे गए पहाड़ी स्वर्ग को मेघ समुद्रम या बादलों का सागर नाम दिया गया है। और यह नाम भी काफी उपयुक्त लगता है, क्योंकि पर्यटकों ने इतनी ऊंचाई पर खूबसूरत बादलों का जमावड़ा कभी नहीं देखा होगा। बादलों के ऊपर तैरती सुनहरी रोशनी, मनमोहक लगती है। यह प्राकृतिक घटना दिसंबर से जनवरी तक सर्दियों के दौरान सबसे अच्छी तरह से देखी जा सकती है। सुबह 5 से 6 बजे के बीच जब सूरज उगता है, तो यह दृश्य शानदार और जादुई लगता है। सर्दियों के दौरान तापमान 15 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, जिससे बाहर रहना और प्रकृति की सुंदरता का अनुभव करना सुखद हो जाता है।

अनियंत्रित पैदल यात्रियों और कम प्रशासनिक नियंत्रण के कारण अक्सर ऐसी खूबसूरत जगहें गैर-जिम्मेदार यात्रियों द्वारा छोड़े गए बोतल, पैकेट आदि की वजह से प्लास्टिक के ढेर में बदल जाती है। इस यात्रा से लौटने के एक सप्ताह बाद, वंजंगी को कचरा एकत्रित करने के लिए पर्यटकों के लिए बंद कर दिया गया था। अखबार की रिपोर्ट के अनुसार स्थानीय लोगों ने सरकारी हस्तक्षेप से तीन लॉरी कचरा इकट्ठा किया।अपने अस्तित्व और भावी संतति के लिए इस माँ प्रकृति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हम हलवे के लिए प्रसिद्ध एक छोटे से गांव मदुगुला का दौरा करने के बाद वापस विशाखापत्तनम पहुंचे।

यात्रा का अंतिम दिन/वराह लक्ष्मी नरसिंह मंदिर

यह मंदिर सिंहचला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। आंध्र प्रदेश में तिरुमाला के बाद दूसरा सबसे बड़ा मंदिर, सिम्हाचलम मंदिर, पारंपरिक रूप से पूर्व की बजाय पश्चिम की ओर मुख करके खड़ा है, जो बुरी शक्तियों पर दैवीय शक्तियों की जीत का प्रतीक है। इस मंदिर का एक और मुख्य आकर्षण अक्षय तृतीया उत्सव है जो हर साल अप्रैल या मई के महीने में मनाया जाता है। इस त्यौहार के अवसर पर भगवान नरसिंह की मूर्ति से चंदन का आवरण हटा दिया जाता है और देवता 12 घंटे यानी सुबह 4 बजे से शाम 4 बजे तक अपने मूल स्वरूप में आ जाते हैं और एक भव्य पूजा का आयोजन भी किया जाता है। मूर्ति का अभिषेक पूरा होने के बाद, भक्तों को भगवान के दर्शन करने की अनुमति दी जाती है।

यारडा बीच

विशाखापत्तनम से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यारडा बीच सड़क मार्ग से शहर के केंद्र और उसके पड़ोसी क्षेत्रों से अच्छी संयोजकता रखता है और स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों के लिए परिवहन के कई विकल्प प्रदान करता है। विशाखापत्तनम दौरे पर आपको यारडा बीच जरूर जाना चाहिए, यह भारत का एक बेहतरीन समुद्र तट है और इसका वातावरण शांत है। आपको नवंबर से फरवरी के महीनों में अपनी यात्रा की योजना बनानी चाहिए। इस समय, मौसम सुहाना और सुखद होता है, तापमान 18 डिग्री सेल्सियस से 32 डिग्री सेल्सियस तक होता है। इसके तट पर तैरने की कोशिश न करें, क्योंकि पानी का बहाव बहुत तेज़ है और ढलान भी बहुत खड़ी है।

डॉल्फिन की नाक लाइटहाउस विशाखापत्तनम

जिस पहाड़ी श्रृंखला पर यह प्रकाश स्तंभ स्थित है उसे यारडा कोंडा के नाम से जाना जाता है और जिस स्थान पर यह प्रकाश स्तंभ बनाया गया है उसे डॉल्फिन नोज़ के नाम से जाना जाता है, जो विशाखापत्तनम बंदरगाह के प्रवेश द्वार पर स्थित है। डॉल्फिन नोज़ लाइट हाउस से बंदरगाहों, समुद्र तटों और पूरे शहर का शानदार दृश्य दिखाई देता है। यह सप्ताह के सभी दिनों में अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक खुला रहता है।

लाइट हाउस हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव था। हम जल्द ही यहाँ दुबारा आने की उम्मीद के साथ, विशाखापट्टनम से चेन्नई तक की बहुत सारी यादें लेकर निकले।

नोट - विशाखापट्टनम से 100 किलोमीटर की दूरी पर लम्बासिंगी नामक गांव स्थित है, जिसे "आंध्र प्रदेश का कश्मीर" भी कहा जाता है। समय की कमी के कारण हम इस जगह पर नहीं जा सके। हमें उम्मीद है कि हम जल्द ही इस जगह पर जाएँगे।

चेन्नई शहर

बेलाल अहमद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चेन्नई शहर की स्थापना का इतिहास रोचक है जो आज से 382 साल पहले अंग्रेजों के द्वारा एक किले (फोर्ट सेंट जॉर्ज) के बनने से शुरू हुई थी। आज ये भारत के सबसे बड़े महानगरों में से एक है । चेन्नई, जिसे पहले मद्रास कहा जाता था, भारत के तमिलनाडु राज्य की राजधानी है। यह दक्षिण भारत का एक प्रमुख सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षिक केंद्र है। यह बंगाल की खाड़ी के कोरोमंडल तट पर स्थित है।

मद्रास शहर दक्षिण भारत के पूर्व में कोरोमंडल तट के पास एक किले के रूप में सबसे पहले बसा जो बाद में फोर्ट सेंट जॉर्ज के नाम से जाना गया। इसकी जमीन पर उस समय विजयनगर शासन का कब्जा था जिसने वहां सरदारों को नियुक्त किया था जो नायक कहे जाते थे। नायकों का प्रांतों के अलग-अलग छोटे इलाकों में शासन था और वे लगभग स्वतंत्र थे। आज के चेन्नई इलाके में उस समय दामरला वेंकटादरी नायक नाम के सरदार का कब्जा था जब अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी यहां व्यापार करने आई थी। अंग्रेज उस समय एक अलग ही तट पर अपनी बस्ती बसाने की कोशिश कर रहे थे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने नायक से एक तीन मील लंबा जमीन का पट्टा हासिल किया जो मद्रासपट्टनम गांव का हिस्सा था जिसके लोग मछली पकड़ा करते थे।

शास्त्रीय संगीत और नृत्य: चेन्नई शास्त्रीय कर्नाटक संगीत और भरतनाट्यम नृत्य का केंद्र होने के लिए प्रसिद्ध है। यह समृद्ध परंपराओं को संरक्षित करता है जो दुनिया भर के कलाकारों को आपनी ओर आकर्षित करती है। शहर में हर साल चेन्नई संगीत सत्र का आयोजन होता है, जो दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है। चेन्नई कला, संस्कृति और साहित्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसकी जड़ें कर्नाटक संगीत, भरतनाट्यम नृत्य और तमिल साहित्य में गहराई से समायी हुई हैं। साथ ही, यह एक संपन्न महानगर है जहाँ आईटी उद्योग और ऑटोमोबाइल विनिर्माण तेजी से बढ़ रहा है।

"चेन्नई सिर्फ नक्शे में स्थित एक स्थान नहीं है - यह एक भावना है, एक संस्कृति है, एक समुदाय है जो पुराने और नए दोनों को खुले हाथों से गले लगाता है।"

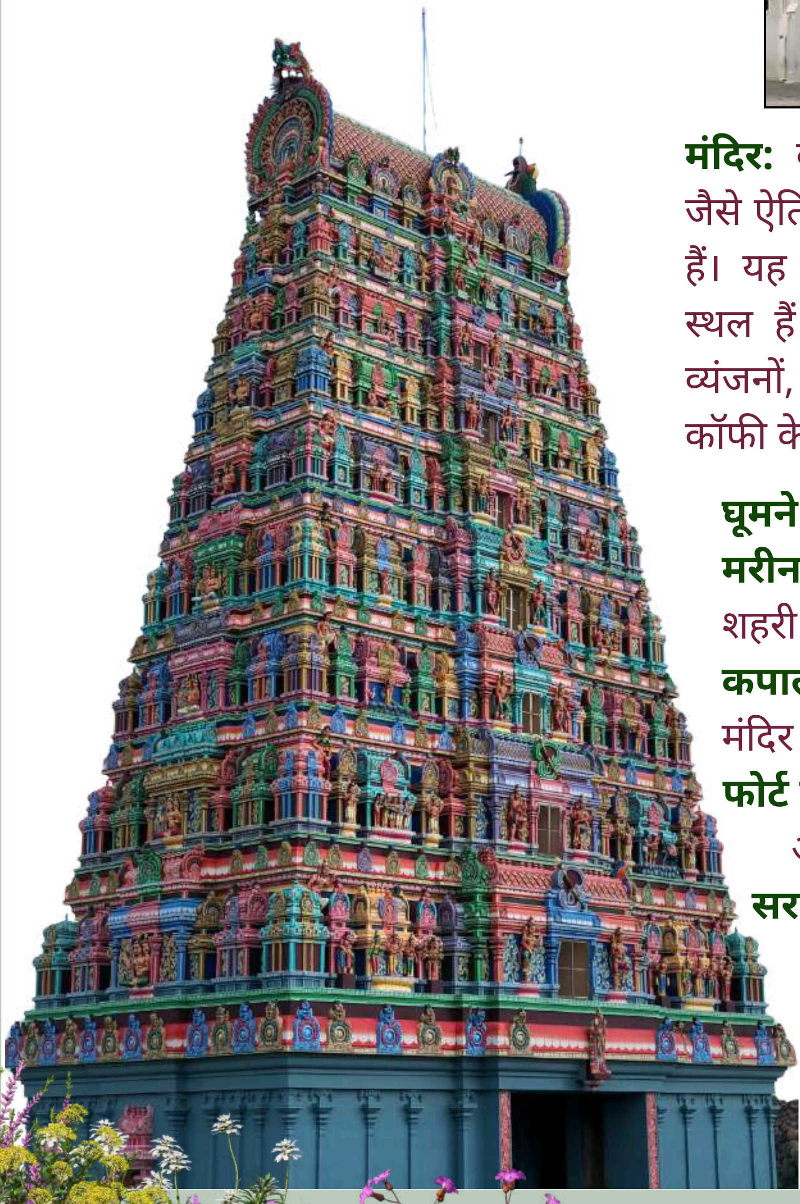

मंदिर: कपालीश्वर मंदिर और पार्थसारथी मंदिर जैसे ऐतिहासिक मंदिर द्रविड़ वास्तुकला को दर्शाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल हैं।चेन्नई अपने प्रामाणिक दक्षिण भारतीय व्यंजनों, विशेषकर इडली, डोसा और फिल्टर कॉफी के लिए प्रसिद्ध है।

घूमने की जगहें

मरीना बीच - दुनिया का दूसरा सबसे लंबा शहरी बीच।

कपालीश्वर मंदिर - मायलापुर में 7वीं सदी का मंदिर।

फोर्ट सेंट जॉर्ज - ऐतिहासिक ब्रिटिश किला, जो अब तमिलनाडु विधानसभा का घर है।

सरकारी संग्रहालय - भारत के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक।

सैंथोम बेसिलिका - सेंट थॉमस द एपोस्टल की कब्र पर बना है।

नेत्र जागरूकता शिविर

चेन्नई

डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, चेन्नई द्वारा 03.12.2024 को चेन्नई में निःशुल्क नेत्र जागरूकता शिविर में श्री डी. जयशंकर, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), तमिलनाडु,श्री को.प. आनंद, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी

पुदुचेरी

डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, पुदुचेरी द्वारा शाखा कार्यालय, पुदुच्चेरी में 03.01.2025 को निःशुल्क नेत्र जागरूकता शिविर का आयोजन। श्री को.प. आनंद, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), और श्री पी. सुगेन्द्रन, आईएएएस, वरिष्ठ उपमहालेखाकार, शाखा कार्यालय, पुदुचेरी, पुदुचेरी के माननीय उपराज्यपाल श्री के. कैलाशनाथन का स्वागत करते हुए।

मदुरै

डॉ. अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय, मदुरै द्वारा शाखा कार्यालय, मदुरै में 10.01.2025 को निःशुल्क नेत्र जागरूकता शिविर का आयोजन।

आखिर कब तक

वी सुललिता रेड्डी
उपनिदेशक

महिलाओं के कार्यस्थल पर, चाहे वो कार्यालय हो, न्यायालय हो, विद्यालय हो, अस्पताल हो भागीदारी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में, महिलाओं की सुरक्षा के लिए, आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य कर दिया गया है। यह समिति "कार्यस्थल पर महिला के साथ यौन उत्पीडन (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष), अधिनियम **2013**" के अंतर्गत गठित की जाती है।

इस समिति में कम से कम चार सदस्य होते हैं और अध्यक्ष का महिला होना अनिवार्य है। एक सदस्य को गैर सरकारी संस्था से नामित करना भी अनिवार्य होता है जिसे महिला अधिकारों और कानून की जानकारी हो।

हमारे कार्यालय में, मैं सुललिता रेड्डी, उप निदेशक इस समिति की अध्यक्ष हूँ और लॉरेटा **NGO** सदस्य हैं। इस समिति की त्रैमासिक बैठकें होती हैं और वार्षिक कार्यशालाएँ भी होती हैं। लोरेटा **ICC** की **NGO** सदस्य की हैसियत से दिनांक **20.03.2025** को कार्यालय में आई। हम दोनों ने दो सत्र में अपनी अपनी बात कही।

उसके पश्चात् हमारी **ICC** की तिमाही बैठक हुई। जिसमें जयंती, नित्या और दो सदस्यों ने भी भाग लिया। लोरेटा एक **NGO** के लिए काम करती है और उसने अधिकतर कार्य महिलाओं को देह व्यापार से मुक्त कराने की दिशा में किया। हर किसी सदस्य, जो सत्र में उपस्थित था, विषय की गंभीरता को समझा और समन्वयकों के साथ विचारों को अच्छा आदान प्रदान किया।

मुझे बहुत खुशी हुई कि वाह वाह क्या अच्छा सत्र हुआ, कितनी अच्छी बैठक हुई । सब जागरुक हुए। अब महिलाओं के साथ गलत व्यवहार खतम नहीं तो कम से कम व्यवहार कम तो हो जाएगा।

मनुष्य, चाहे इस धरती पर कितना भी गलत होते हुए देखे, उसे उस घटना या उस पल का मर्म तब तक समझ नही आता जब तक वह घटना स्वयं के साथ न हुई हो। इसीलिए लोगों की प्रतिक्रियाओं से खुद को अछूता रखना ही खुद को सुरक्षित रखना है।

लेकिन इसका अर्थ ये कतई नहीं है कि हम अपने सारे संवेदनाओं को मार दें। महिलाओं के भौतिक, मानसिक और अन्य ज़रूरतों को आज भी अनदेखा किया जाता है चाहे वो परिवार हो, कार्यालय हो, समाज हो। वहीं पुरुषों की ज़रूरतों को उनका हक माना जाता है। एक कार्यालय में कार्यरत महिला के बारे में पुरुषों की सोच आज भी वही है जिसमें समाज को लगता है कि अगर महिला घर और कार्यालय एक साथ सँभाल नहीं सकती, तो उसे सिर्फ घर सँभालना चाहिए या हल्के काम जैसे शिक्षक, इत्यादि ही करना चाहिए। क्या ये सोच सही है?बस इस लेख से मैं एक ही बात सामने लाना चाहती हूँ कि आज भी समाज मे महिलाओं को चाहे वो सुगृहणि हो या कामकाजी महिला, वो जगह, वो इज्जत, वो मुकाम नहीं मिली है, जिनकी वे हकदार हैं।

समाज में इस विषय के अलावा भी अन्य कई विषय हैं जिनमें समानता सिर्फ कागज़ पर है, जीवन में नहीं। ये फरक "आखिर कब तक" ?

श्रवण सहायता जागरूकता शिविर

11.03.2025 को चेन्नई में श्रवण सहायता केंद्र द्वारा श्रवण सहायता जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। श्रीमती जयश्री वेंकटरमणन, आईएएस, उप महालेखाकार, एएमजी III एवं अधिकारी व कर्मचारी गण

पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट (पीएफटी)

श्री को.प. आनंद, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), श्री डी. जयशंकर, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं कार्यालय के पदधारी 13.03.2025 और 14.03.2025 को कावेरी अस्पताल, चेन्नई द्वारा चेन्नई में आयोजित पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट (पीएफटी) में अपने पल्मोनरी फंक्शन की जाँच करते हुए ।

पार्वती अस्पताल, चेन्नई द्वारा 06.11.2024 को आयोजित आर्थोपेडिक शिविर

शिविर में श्री को.प. आनंद, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अधिकारी एवं कर्मचारी गण

संघर्ष में साहस

आर. संदीप सिंह
(श्रीमती. अर्चना प्रजापति, स.लेप.अ के पति)

मैं अपनी कहानी की शुरूआत इन पंक्तियों के साथ करना चाहूँगा कि "दुनिया ने मेरी बुलंदियाँ देखी, पर कभी पाँव के छाले नहीं देखे"।

शीर्षक के अनुसार हम सभी जानते हैं कि जीवन एक संघर्ष है, क्योंकि संघर्ष नहीं तो उन्नति नहीं, लेकिन फिर भी मैं इसे एक उत्साह और जोश के साथ जीता हूँ क्योंकि मैं एक आशावादी इंसान हूँ और इतने हिस्सों में बंट गया हूँ मैं कि मेरे हिस्सों में कुछ बचा ही नहीं और जुल्म क्या किया है, पता ही नहीं जीवन से बड़ी कोई सजा ही नहीं"।

सब कहते हैं कि बिना संघर्ष के जीवन में कुछ भी पाना कठिन है, और मैं पढ़ने-लिखने में शुरू से ही कमज़ोर हूँ, लेकिन फिर भी अपने परिश्रम से आज मैं कुछ और हूँ। क्योंकि उनके माथे पर कहाँ कोई शिकन होती है, जिन्हें कुछ कर दिखाने की लगन होती है। इतनी मुश्किलों से गुज़ारी है ये जिंदगी, मैं खाली बैठता हूँ तो थकन होती है ।

अपनी कहानी के अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि चाहे जितनी भी मुश्किले जीवन में आ जाए, हमें अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए, और पूरी ईमानदारी और परिश्रम के साथ अपने लक्ष्य को पाने की कोशिश करते रहना चाहिए और जीवन के इस संघर्ष में हमें संयम, साहस, और पूरे उत्साह एवं जोश के साथ अपनी प्रतिभा को उजागर करना चाहिए। क्योंकि " बड़ी अजीब सी दौड़ है मैं जिंदगी जीत जाऊँ तो कई अपने पीछे छूट जाते है, और अगर हार जाऊँ तो अपने ही पीछा छोड़ देते हैं।"

इसलिए हमें संघर्ष करके कामयाब होकर अपनी पहचान खुद बनानी चाहिए ।

ऑपरेशन सिंदूर

आर. संदीप सिंह
(श्रीमती. अर्चना प्रजापति, स.लेप.अ के पति)

हमें रखे थे संयम, धैर्य और नहीं की थी अपनी हद पर ।
जब आयी बात आत्मरक्ष की,तो फिर कर दी सर हद पार।।
दुश्मन को सरजमी पर पस्त कर,किया उसे चकना चूर।
ऐसे चला था ऑपरेशन सिंदूर ।।

भारत माँ के खिलाफ आए दुश्मन फिर किया हिमाकत,
फिर दिखाएगा गुरूरू।
तो फिर ज़रूर चलता रहेगा ऑपरेशन सिंदूर ।।
दुश्मन असमंजसता में रहा कि कैसे हमने उसे ध्वस्त किया।
क्योंकि हमारी रक्षा प्रणाली में है, जांबाज़ वीरांगना
व्योमिका और सोफिया।।
जिसकी कामयाबी की आवाज़ गूँजी है-दूर-दूर।
ऐसे चला ऑपरेशन सिंदूर ।।

बस मेरा मुल्क महक जाए रंग-बिरंगे फूलों से ।
खुशी होगी अगर ये शरीर आये लिपटे तिरंगों से ।।
-जय हिंद, जय भारत ।

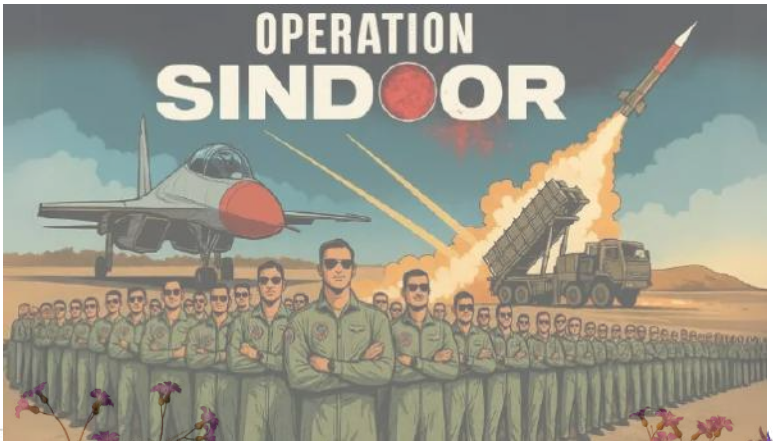

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025

श्री को.प. आनंद, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), श्री डी. जयशंकर, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तमिलनाडु, श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तमिलनाडु एवं पुदुचेरी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। योग गुरु तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के विभागाध्यक्षों, वर्ग अधिकारियों, अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच योग के लाभों पर व्याख्यान दिया एवं पदधारियों के बीच योग आसन और उसके लाभ को समझाया और योग विशेषज्ञों द्वारा स्टाफ सदस्यों के बीच योग आसन का प्रदर्शन किया गया।

एक संयोग एक आह्वानः जगन्नाथ मंदिर (ईसीआर) की यात्रा

संजोय घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

चेन्नई के कानात्तूर में स्थित जगन्नाथ मंदिर की यात्रा पूर्व नियोजित नहीं थी, न ही किसी धार्मिक अनुष्ठान की योजना थी । यह तो मानो, भगवान जगन्नाथ का बुलावा ही था, जो एक क्षण में मेरे अंतर में प्रकट हुआ। 5 जुलाई का दिन एक साधारण सा दिन था, लेकिन भगवान की कृपा से यह दिन विशेष बन गया।

दोपहर के सन्नाटे में मन में एक ऐसी इच्छा जाग उठी कि भगवान जगन्नाथजी का दर्शन किया जाए, तो चेन्नई ईस्ट कोस्ट रोड (ECR) पर स्थित जगन्नाथ मंदिर का स्मरण आया, जहाँ मैं अभी तक नहीं गया हूँ। जब मैंने अपनी पत्नी को मंदिर जाने की इच्छा बताई तो वह भी मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो गई। शायद यह भी ईश्वर की ही इच्छा थी। शाम चार बजे, हमने बिना किसी पूर्व तैयारी के यात्रा शुरू की। मंदिर मेरे घर से तीस किलोमीटर की दूरी पर था। गूगल से पता चला कि मंदिर शाम तीन से छह बजे तक खुला रहता है। हमने भगवान के दर्शन की इच्छा से अपनी यात्रा शुरू की थी और तब भी मन में यह भावना थी कि कोई अदृश्य शक्ति हमें वहाँ बुला रही है।जैसे ही हम मंदिर पहुँचे, एक नेदृश्य हमें चमत्कृत कर दिया । भगवान का रथ वापस मंदिर लौट रहा था, यह थी उल्टी रथयात्रा, यानी रथयात्रा का वह दिन जब भगवान बाहर की यात्रा पूर्ण करके वापस अपने मंदिर में लौटते हैं।

यह मात्र एक संयोग ही था, बिना किसी योजना के, ठीक उसी क्षण पहुँचना जब प्रभु अपने मूल स्थान पर लौट रहे हों । हम बिल्कुल सही समय पर वहाँ पहुँच गए। यह मात्र संयोग ही नहीं , बल्कि ईश्वर की लीला थी। हम दोनों ने भी भावविभोर होकर उस पवित्र रथयात्रा में भाग लिया। रथ पर ही पूजा अर्चना की, पुष्प अर्पित किए और प्रभु की कृपा का अनुभव किया। प्रार्थना के वे क्षण, भक्तों का "जय जगन्नाथ" का जयकारा, शंखनाद, घंटियों की ध्वनि सब मिलकर एक ऐसा सुन्दर वातावरण बन गया कि मानो समय स्थिर हो गया हो। मंदिर में हमने करीब दो घंटे बिताए, मुख्य मंदिर की वास्तुकला, आसपास के छोटे छोटे देवालय और वातावरण में फैला आध्यात्मिक कंपन, सब कुछ मन को शांत कर देने वाला था। मंदिर के ठीक पास ही समुद्र तट है, वहाँ जाकर हमने सूर्यास्त की लालिमा को देखा जो मानो जगन्नाथ की ही अनुपम छाया में डूब रहा था, कुछ तस्वीरें ले ली, पर असली छवि तो हृदय में अंकित हो चुकी थी। उस दिन का अंत "जय जगन्नाथ" की दिव्य प्रतिध्वनि के साथ हुआ, वह दिन सिर्फ एक यात्रा नहीं, एक अनुभूति थी, जहाँ ईश्वर ने स्वयं बुलाया, दर्शन दिए, और यह मेरे अब तक के सबसे यादगार दिनों में से एक हो गया । मंदिर से बाहर निकलते समय, मैं अपने साथ आंतरिक शांति और कृतज्ञता से भरा हृदय लेकर गया।

भाषा विकास

एस.सुधावल्ली
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भाषा विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे भाषण को संसाधित कर सकते हैं और संवाद कर सकते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान, बच्चा धीरे-धीरे बुनियादी भाषाई पैटर्न को समझ सकता है और प्रवाह प्राप्त करने से पहले धीरे-धीरे अपनी शब्दावली का विस्तार कर सकता है। बच्चों में भाषा का विकास आमतौर पर कई अलग-अलग चरणों से होकर गुजरता है, जो जन्म से शुरू होकर प्रीस्कूल वर्षों तक जारी रहता है। इन चरणों में पूर्व-भाषाई संचार, बड़बड़ाना, होलोफ्रास्टिक भाषण, दो-शब्द चरण, टेलीग्राफिक भाषण और अंततः बहु-शब्द वाक्य शामिल हैं। चूँकि भाषा के घटक और उनसे जुड़ी शब्दावली पढ़ने के कई तत्वों की हमारी सीमाओं के साथ संरेखित होती है, इसलिए उन्हें इस खंड में संक्षेप में वर्णित किया गया है। भाषाविदों ने पाँच बुनियादी घटकों (ध्वनिविज्ञान, आकृति विज्ञान, वाक्यविन्यास, शब्दार्थ विज्ञान और व्यावहारिकता) की पहचान की है जो सभी भाषाओं में पाए जाते हैं।

यह एक क्रमिक यात्रा है जो आमतौर पर शिशु अवस्था में शुरू होती है और बचपन और किशोरावस्था तक जारी रहती है, जिसमें शब्दावली, व्याकरण और प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता जैसे विभिन्न पहलू शामिल होते हैं। भाषा विकास को सीखने की सामान्य प्रक्रियाओं द्वारा आगे बढ़ने के लिए माना जाता है जिसमें बच्चे भाषाई इनपुट से शब्दों और उच्चारणों के रूप, अर्थ और उपयोग प्राप्त करते हैं। बच्चे अक्सर उन शब्दों को पुन: प्रस्तुत करना शुरू करते हैं जो उन्हें बार-बार मिलते हैं जिस विधि से हम भाषा कौशल विकसित करते हैं वह सार्वभौमिक है; हालाँकि, प्रमुख बहस यह है कि वाक्यविन्यास के नियम कैसे हासिल किए जाते हैं। वाक्यविन्यास विकास के दो अलग-अलग प्रमुख सिद्धांत हैं: एक अनुभववादी दृष्टिकोण जिसके द्वारा बच्चे भाषाई इनपुट से सभी वाक्यविन्यास नियम सीखते हैं, और एक मूलनिवासी दृष्टिकोण जिसके द्वारा वाक्यविन्यास के कुछ सिद्धांत जन्मजात होते हैं और मानव जीनोम के माध्यम से प्रसारित होते हैं।

ग्रहणशील भाषा: शिशु बोलने से पहले ही ध्वनियों और शब्दों को समझना शुरू कर देते हैं ।

अभिव्यंजक भाषा: बड़बड़ाना और इशारे-ज़रूरतों और इच्छाओं को व्यक्त करने के तरीके के रूप में शुरू होते हैं ।

प्रारंभिक स्वर-निर्माण: बच्चे कूकने और बड़बड़ाने जैसी आवाजें निकालते हैं, विभिन्न ध्वनियों और स्वर-उच्चारण के साथ प्रयोग करते हैं ।

प्रथम शब्द: छोटे बच्चे वस्तुओं को लेबल करने और अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने के लिए एकल शब्दों का उपयोग करना शुरू करते हैं ।

शब्दावली विस्तार: बच्चों की शब्दावली में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, और वे अधिक जटिल वाक्यों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं ।

व्याकरण को समझना: वे बुनियादी व्याकरणिक नियमों को समझना शुरू करते हैं ।

निरंतर शब्दावली विकास: बच्चे नए शब्द सीखते रहते हैं और भाषा की अपनी समझ का विस्तार करते रहते हैं ।

परिष्कृत व्याकरण और वाक्यविन्यास: वे अपने व्याकरण और वाक्यविन्यास को परिष्कृत करते हैं, जिससे उनकी भाषा अधिक परिष्कृत हो जाती है ।

पर्यावरणीय कारक: देखभाल करने वालों, पुस्तकों और अन्य मीडिया के साथ बातचीत के माध्यम से भाषा का परिचय महत्वपूर्ण है ।

संज्ञानात्मक विकास: बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमताएँ भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि भाषा को समझने के लिए सोचने और सूचना को संसाधित करने की आवश्यकता होती है ।

व्यक्तिगत अंतर: प्रत्येक बच्चा अपनी गति से भाषा विकसित करता है, कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में पहले या बाद में मील के पत्थर तक पहुँचते हैं। एक बच्चे की उम्र और जिस दर से वह बोली जाने वाली भाषा के प्रत्येक मील के पत्थर को पार करता है, वह काफी हद तक भिन्न होता है। इसलिए, एक बच्चे के बोली जाने वाली भाषा कौशल विकास की तुलना मानदंडों से की जानी चाहिए, न कि अन्य बच्चों से।

भाषा विकास में सहायता: समृद्ध भाषा में बातचीत करें: अपने बच्चे से अक्सर बात करें, वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करें और संवाद करने के उनके प्रयासों का जवाब दें।

नियमित रूप से जोर से पढ़ें: बच्चों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और कहानियों से परिचित कराएं।

खेल के अवसर प्रदान करें: खेल बच्चों को भाषा का उपयोग करने और अपने संचार कौशल का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करता है।

प्रश्न पूछने और अन्वेषण को प्रोत्साहित करें: बच्चों को प्रोत्साहित करें।

लेखापरीक्षा दिवस 2024   18.11.2024 को रंगोली प्रतियोगिता

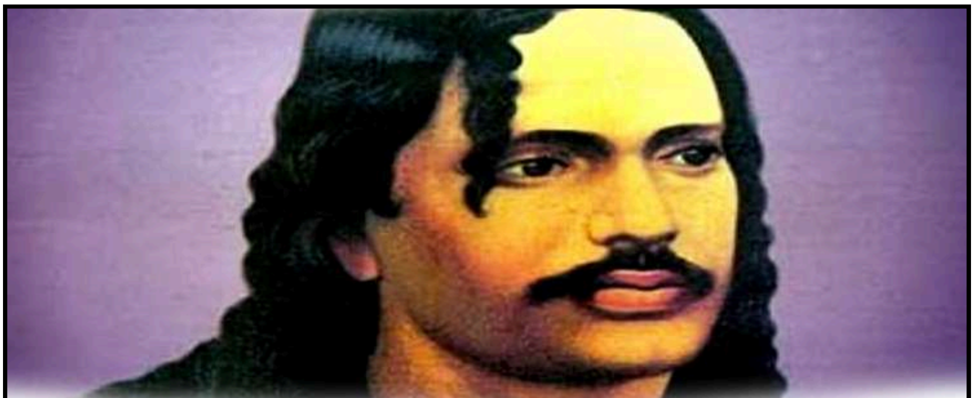

निज भाषा उन्नति अहै,सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा–ज्ञान के,मिटत न हिय को सूल
– भारतेंदु हरिश्चंद्र

हमारे कार्यालय में विश्व पुस्तक दिवस

को.प. आनंद, आई ए एवं ए एस
महानिदेशक लेखापरीक्षा(केन्द्रीय) चेन्नै

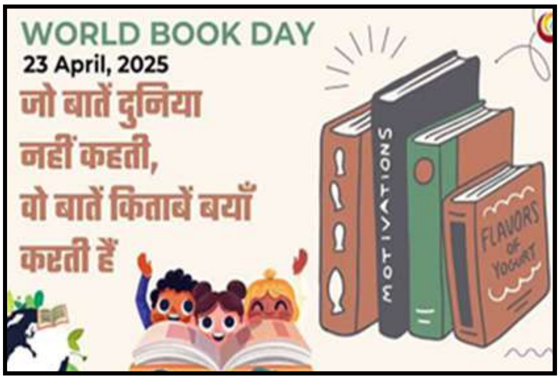

किताबें इंसान की सबसे वफादार दोस्त होती हैं, और ये इंसानियत को गढ़ती हैं। ये हमें सवालों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं और दुनिया और ज़िंदगी की हर चीज़ का समाधान सुझाती हैं। किताबें, एक नई दुनिया की खिड़की की तरह होती हैं – हर नए पन्ने के साथ, ये हमें नए लोगों, नई संस्कृतियों और नए विचारों से रूबरू कराती हैं।

विश्व पुस्तक दिवस हर साल 23 अप्रैल को मनाया जाता है। इसे विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के रूप में भी जाना जाता है। यूनेस्को ने 23 अप्रैल, 1995 से इस दिवस को मनाना शुरू किया था। यूनेस्को का उद्देश्य इस दिन दुनिया भर के लोगों में साक्षरता को बढ़ावा देना है।

पुस्तक दिवस मनाने का मूल विचार स्पेनिश लेखक विसेंट क्लेवेल आंद्रेस का था। स्पेनिश लेखक विसेंट क्लेवेल आंद्रेस ने मिगुएल डे सर्वेंट्स की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 23 अप्रैल और फिर 7 अक्टूबर को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाने का सुझाव दिया था। बाद में, यूनेस्को ने 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाने का निर्णय लिया। इसे दुनिया भर में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। विश्व पुस्तक दिवस पर अच्छी किताबें लिखने वाले लेखकों को सम्मानित किया जाता है। कुछ जगहों पर प्रकाशकों को पुरस्कार भी दिए जाते हैं। कई जगहों पर पुस्तक विमोचन समारोह भी आयोजित किए जाते हैं। साहित्यिक संस्थाओं में पुस्तकों पर चर्चाएँ होती हैं।

CELEBRATION OF
WORLD BOOK DAY
FROM 23.04.2025 TO 25.04.2025
Between 10 a.m. and 05 p.m.
At 7th Floor, “Audit Bhawan”
ALL ARE WELCOME

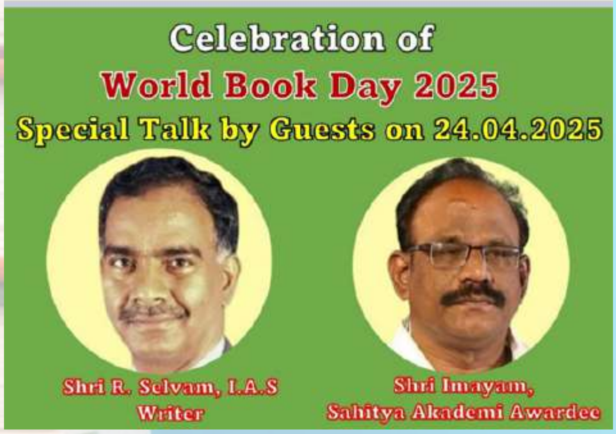
Celebration of
World Book Day 2025
Special Talk by Guests on 24.04.2025
Shri R. Selvam, I.A.S
Writer
Shri Imayam,
Sahitya Akademi Awardee

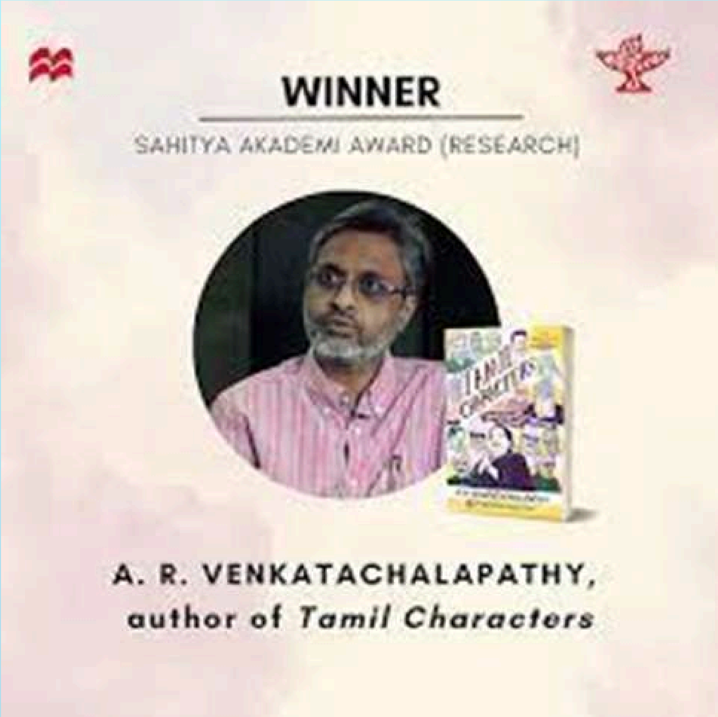
WINNER
SAHITYA AKADEMI AWARD (RESEARCH)
A. R. VENKATACHALAPATHY,
author of Tamil Characters

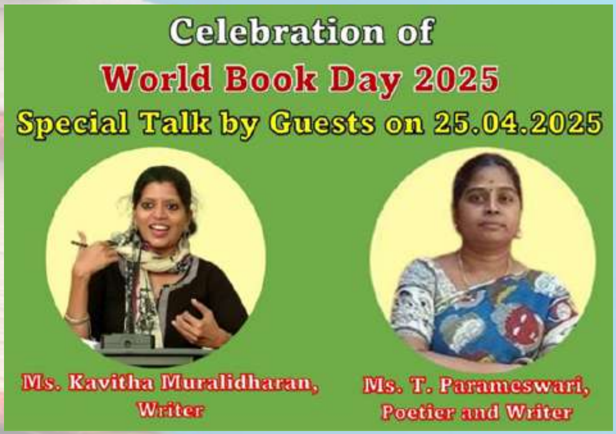
Celebration of
World Book Day 2025
Special Talk by Guests on 25.04.2025
Ms. Kavitha Muralidharan,
Writer
Ms. T. Parameswari,
Poetier and Writer

EXIT

विश्व पुस्तक दिवस मनाने के लिए कार्यालय में 23 अप्रैल, 2025 से 25 अप्रैल, 2025 तक तीन दिवसीय पुस्तक महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव में तीनों दिन दोपहर के भोजन के समय पुस्तक मेला और अतिथि व्याख्यान शामिल थे।

पुस्तक महोत्सव का उद्घाटन श्री आर. अम्बलवाणन, आईए एवं एएस (निदेशक, उद्यमिता विकास एवं नवाचार संस्थान, तमिलनाडु) और श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईए एवं एएस (प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा II, तमिलनाडु एवं पुदुचेरी) ने किया। इस कार्यक्रम में अक्षरों, शब्दों और पुस्तकों की दुनिया से जुड़ी प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया।

श्री आर. वेंकटाचलपति, भारतीय इतिहासकार, लेखक और अनुवादक हैं। श्री इमयम, लेखक, श्रीमती कविता मुरलीधरन, लेखिका और अनुवादक, श्रीमती परमेश्वरी, कवयत्रि और लेखिका, श्री आर. सेल्वम, आईएएस, चमड़ा निर्यात परिषद (सीएलई) के कार्यकारी निदेशक और लेखक, श्री के. नटराजन, आईएएस, डाक विभाग, चेन्नई में महा डाकपाल और प्रखर पाठक, श्री के. बालामुरुगन, आईआरएस (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर), और प्रखर पाठक, श्री सुरेश कुमार, आईए एंड एएस (सेवानिवृत्त), वक्ता ने दोपहर के भोजन के सत्र में भाग लिया और श्रोताओं को पुस्तकों के महत्व के बारे में आगाह किया।

यह उल्लेखनीय है कि पहले दो लेखक(श्री आर. वेंकटाचलपति और श्री इमयम)साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता हैं, और उन्हें हमारे परिसर में आमंत्रित करना वास्तव में सौभाग्य की बात है। तमिलनाडु पाठ्यपुस्तक एवं शैक्षिक सेवा निगम, कालच्चुवडु पब्लिशिंग हाउस, भारती बुकस्टोर, किष़क्कु पब्लिशिंग हाउस, न्यू सेंचुरी बुक हाउस, शेनबागा पब्लिशिंग हाउस, नल्लरम पब्लिशिंग हाउस, करुंचट्टई पब्लिशिंग हाउस, जीरो डिग्री पब्लिशिंग हाउस, द हिंदू/हिंदू तमिष़ दिसै पब्लिशिंग हाउस और अंधि मष़ै पब्लिशिंग हाउस सहित कई प्रकाशनों ने भाग लिया। चेन्नई स्थित सभी आईए एवं एडी कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सुनकर अभिभूत हो गए।

बचपन की यादें

शशिकांत कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

छोटे-छोटे पल, बड़ी सी कहानी,
बीते लम्हों की एक पुरानी निशानी।
कभी हँसी में भीगी, कभी आँसू लायी,
यादें हैं जो दिल को बहुत गहराई से छू जाएँ।

कागज़ की नावें, बारिश की बूंदें,
बचपन की गलियों में भागती धूपें।
वो स्कूल की घंटी, वो दोस्ती का साथ,
हर मोड़ पर मिलती है कोई भूली बात।

दादी की वो कहानियाँ, माँ की वो झप्पी,
पिता की डाँट में छिपी सच्ची चिन्ता भी।
वो तकरार, वो प्यार, वो रिश्तों की मिठास,
यादों में बसी है हर एक एहसास।

आज भी जब चुपचाप सी शाम आती है,
दिल की किसी खिड़की से पुरानी हवा बहती है,
कुछ पल रुककर आंखें नम हो जाती है,
यादें फिर से जीने को मजबूर कर जाती हैं।

पुदुचेरी में लेखापरीक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET),पुदुचेरी में दिनांक 19.11.2024 को लेखापरीक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन, पुदुचेरी में लेखापरीक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम में उपस्थित श्री को.प आनंद, आईएएएस प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्ष-II), वर्ग अधिकारी, DIET के अधिकारी और कर्मचारी ।

आज का परिदृश्य

शशिकांत कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ये बड़ी-बड़ी इमारतें,
ये बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ,
ये बड़े-बड़े नाम,
ये बड़े-बड़े ब्राण्ड,
ये बड़े-बड़े मॉल, ये मालिक,
ये सड़कें, ये गलियारे,
ये नायक, ये नेता,
ये धरती, ये देश,
सब पर्दे के आगे का खेल है।
इस पर्दे के पीछे की कहानी
कुछ और है..........

न जाने कितने ही गुमनाम चेहरे
झुर्रियाँ, भूखे पेट, नंगे बदन
बिलखता बचपन, जर्जर जवानी
बेसहारा बुढ़ापा, गुमनाम मौत
और भी न जाने क्या-क्या?
खैर छोड़ो।
सब कुछ तो हम बयाँ नहीं कर पाएँगे
ना तुम सुन पाओगे
बस एक छोटा-सा काम
मेरा एक सलाम
देशवासियों के नाम।।

हिन्दी भाषा का प्रचार और
विकास कोई रोक नहीं सकता

पंडित गोविंद बल्लभ पंत

ओडिशा का रत्न-देवमाली

संजोय घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अप्रैल 2025 में जैसे ही दस दिनों की छुट्टी की सूचना मिली, मन में हलचल सी मच गई। रोजमर्रा की जिंदगी से कुछ क्षण चुराकर प्रकृति की गोद में खो जाने की चाह बरसों से मन में पल रही थी, सोचते सोचते मध्य भारत की ओर एक विस्तृत यात्रा की रूपरेखा बनी, यह कोई आम सैर नहीं थी-यह एक आत्मा यात्रा थी जो करीब 3000 किलोमीटर के विस्तार में फैली थी और जिसकी हर मोड पर एक नई कहानी जन्म ले रही थी।

इस यात्रा की सबसे खास बात थी- यह पूरी तरह से स्वतंत्र यात्रा थी, न कोई गाइड (गूगल को छोड़कर) न कोई अन्य समूह-सिर्फ मैं, मेरा वाहन और मेरे साथ मेरी जीवनसंगिनी, जो हर मोड़ पर मेरी संबल बनी रही,एक सच्चे नाविक की तरह, दिशा देती हुई, साथ निभाती हुई।

हमने अनेक जगहों की यात्रा की, पर आज मैं आपको ले जा रहा हूँ ओडिशा के कोरापुट जिले में स्थित एक दुर्लभ , लगभग अदृश्य किंतु अत्यंत मनोहारी स्थल की ओर-देवमाली।

देवमाली चोटी ओडिशा राज्य की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है। कोरापुट से सेमीलीगुडा होते हुए लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर है । घने हरेभरे जंगलों से घिरी यह चोटी, वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध है। हाल ही में, ओडिशा पर्यटन विभाग इस चोटी को एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाने के लिए कई विकासात्मक कदम उठा रही है, जिसमें सड़कें, पहाड़ी की चोटी पर सुविधा केंद्र, पेयजल केंद्र और मैदान के अच्छे दृश्य के लिए निगरानी टॉवर शामिल हैं। पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ते हुए कई झरने भी मिलते हैं।

रात के 10.30 बजे हम कोरापुट पहुँचे । आसमान गरज रहा था। तेज बारिश हो रही थी, और हम पहाड़ी रास्ते से गुज़रते हुए अनजान धरती पर कदम रख रहे थे, गाड़ी की हेडलाइट टिमटिमा रही थी और मोड़ एक रहस्य की तरह सामने आ रहा था । यह अनुभव किसी रोमांचक उपन्यास की पहली पंक्तियों की तरह थी, अपरिचित, आकर्षक और अद्भुत ।

हमारी इस यात्रा की शुरूआत दुदुमा जलप्रपात से हुई। लेकिन वह कहानी फिर कभी, आज मैं केवल देवमाली के मोह में आपको बाँधना चाहता हूँ ।

अगली सुबह 9 बजे, हम कोरापुट के अपने होटल से निकले,70 किलोमीटर की दूरी तय करनी थी। नाश्ता होटेल में ही कर लिया था। क्योंकि आगे रास्ता दुर्गम और एकांत था, कुछ दूर तक सब सामान्य लगा, लेकिन एक घंटे बाद पहाड़ी रास्तों ने हमारा स्वागत किया। एक शॉर्टकट पकड़ा, जो संकरा, उबड़-खाबड़ और चुनौतीपूर्ण था। लेकिन कहते हैं न जो रास्ते कठिन होते हैं, वही मंजिल को सुंदर बनाते हैं। इसी उबड़-खाबड़ सफर के पार एक स्वर्ग हमारा इंतज़ार कर रहा था। मैंने एक स्थान पर गाड़ी रोक दी। वहाँ से आगे की यात्रा पैदल थी। रास्ते के दोनों और घनी हरियाली, बादलों की परछाइयाँ, और दूर आसमान को चूमती पहाड़ियाँ, यह मनोरम दृश्य एक चित्रकारी जैसा लग रहा था। एक निचले हिस्से से पूरी पहाड़ी का विहंगम दृश्य दिखता था, जैसे प्रकृति ने अपनी हथेली में सौंदर्य समेट रखा हो।

सौभाग्य से वहाँ एक स्थानीय विक्रेता मसाला मुड़ी बेच रहा था। गरम गरम मुड़ी का स्वाद, पहाड़ी हवा और सामने खुला आकाश-जीवन में इस तरह का अनुभव बहुत ही अमूल्य होता है ।

देवमाली का शिखर अत्यंत दुर्गम है। वहाँ सिर्फ एक चाय की दुकान और ओडिशा पर्यटन विकास निगम का एक आउटलेट था। हमने वहीं बैठकर कॉफी की चुस्कियों के बीच उस शांत चोटी का आनंद लिया ।

वापसी यात्रा में हमने दूसरी दिशा से नीचे उतरना तय किया। यह रास्ता अपेक्षाकृत बेहतर था और जंगल की हरियाली में और भी प्राण बसते थे। रास्ता सुंदर था । वहाँ की प्राकृतिक खूबसूरती मन को छू जाने वाली थी।

लौटते समय कोरापुट में एक स्थानीय ढाबे में रुके। वहाँ का स्थानीय भोजन और विशेषकर प्रतिद्ध मिठाई " छेनापोड़ा" आज भी स्मृति में गूँजते हैं। छेनापोड़ा न केवल स्वाद में अद्भुत था, बल्कि उसमें ओडिशा की सांस्कृतिक आत्मा की मिठास भी थी।

हम आगे कोरापुट में स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर (लोकप्रिय रूप से "सबारा श्रीक्षेत्र" के रूप में जाना जाता है) में भी गए । वहाँ की यात्रा और अनुभव मैं अगली बार प्रस्तुत करूँगा।

मुझे गर्व है कि मेरा जन्म उस देश में हुआ है जहाँ हर घाटी एक कविता है, हर पहाड़ी एक पुरानी कथा, और हर नदी एक जीवन का सार। हमारा भारत सुंदरता और विविधताओं से भरपूर, प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न देश है । इसकी सुंदरता देखने के लिए एक जीवन पर्याप्त नहीं।

देवमाली को अपनी समृद्ध जैव विविधता, मनोरम दृश्यों, प्राकृतिक दृश्यों और सांस्कृतिक समृद्धि के कारण ओडिशा का “गुप्त रत्न” कहा जाता है । देवमाली तुम केवल एक पहाड़ी नहीं, एक भाव हो, और मैं एक यात्री,जो उस भाव को अपनी स्मृति में सहेज कर आगे बढ़ गया।

जब आकाश टूटा, और मैं उठा

सौमल्या सेन
लेखापरीक्षक

शहर की रोशनियाँ नीचे तारे-सी टिमटिमा रही थीं — हर एक दीप मेरी आँखों की जिज्ञासा का मूक साक्षी। मैंने अपना चेहरा हवाई जहाज़ की खिड़की से सटाया, दिल तेज़ी से धड़क रहा था — अपने पहले उड़ान की वह पवित्र-सी अनुभूति, जब इंसान पहली बार आकाश को छूता है। वह क्षण जादू-सा था। लेकिन सपने, धुंध की तरह, जल्द ही छूमंतर हो जाते हैं। ज़मीन पर पाँव रखते ही, हकीकत ने सिर उठाया। जिस रात मैं चेन्नई पहुँचा, मुझे न ठिकाने का पता था, न ठहरने की जगह का। कैब कैसे बुक करें — यह तक नहीं मालूम। वह नए साल की पूर्व संध्या थी — जब पूरा शहर रोशनी और उल्लास में डूबा था, पर मेरे लिए वह रात उलझन, बेबसी, डर और अनिश्चितता से भरी थी।

होटल के दाम आसमान छू रहे थे। इस अनजाने शहर में मेरा कोई अपना नहीं था। बस मैं, मेरा भाई और हमारा सामान —एक अनजानी धरती पर दो खोई हुई आत्माएँ। किसी तरह एक रात की पनाह मिली। पर अगली सुबह हम फिर भटके हुए राहगीर थे। कम से कम मेरे पास ऑफिस था, जहाँ दिन बिताया जा सके। पर मेरे भाई के पास तो सड़क ही थी — और वही बन गई उसका आसरा। वह एक मूक रक्षक की तरह मेरे कार्यस्थल के पास एक पेड़ के नीचे घंटों बैठा रहता — न कोई शिकायत, न कोई थकान। जैसे एक अथक आत्मा जो कभी थकती नहीं, हारती नहीं — बस देखती है, रक्षा करती है, त्याग करती है— बदले में कुछ भी माँगे बिना। आज भी उसकी वह छवि मेरी आँखों में बसी है — धूप उसके चेहरे पर बिखरी हुई, और वह — मानो अराजकता में फँसे हुए एक साधु की तरह शांत।

वह अनुभव मेरे जीवन का एक ऐसा दु:स्वप्न था, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता — जिसने मुझे सिखाया कि "बेघर" होना असल में कैसा लगता है। वह भावना — कि आप कहीं के नहीं रहे, किसी जगह के नहीं हैं। एक दिन मैं टूट गया। मैं रोया — कमज़ोरी से नहीं, बल्कि पूरी तरह से भावनात्मक थकान से। लेकिन यह तो सिर्फ शुरुआत थी।

चेन्नई आने का मतलब था कि हर चीज़ का नया हो जाना। दफ़्तर, लोग, संस्कृति, खाना और एक भाषा जो आज भी मेरी समझ से परे है। तमिल मुझे किसी रहस्यमय कोड जैसी लगती — जिसे मैं सुलझा नहीं पाया। मैंने सिर हिलाया, मुस्कुराया — मानो कि मैं समझ गया हूँ — जब कि अकेलापन चुपचाप मेरे बगल में बैठा रहा। कुछ लोगों का व्यवहार तटस्थ था, कुछ का कड़वा। लेकिन ज़्यादातर बार मुझे मिला प्यार, दया और अजनबियों का ऐसा अपनापन — जैसे किसी अनचाहे क्षण में कोई हाथ थाम ले। यहाँ के कार्य का माहौल तेज़ और अलग था। त्योहार अनजाने और गर्मी — मानो सूरज कभी अस्त नहीं होता। खाना — तीखा, खट्टा और नारियल से भरा — मेरे स्वाद से बिल्कुल अलग। धीरे-धीरे, मेरी आदतें बदलने लगीं। मैं झुकना, ढलना सीख रहा था । मुझे अपने लोग याद आ रहे थे। मुझे अपनी भाषा, अपने शहर की हल्की बारिश याद आ रही थी।

चेन्नै शहर में, जहाँ मेरे जीवन की पहली सर्जरी हुई — रेटिना का ऑपरेशन। आज भी वह मंगलवार की सुबह मुझे याद है — डर के साथ नींद खुली थी, और भीतर अनायास बज रहा था — "श्री हनुमते नमः" —मानो कोई दैवीय लय मुझे भय से बाहर निकाल रही हो। । ऑपरेशन थियेटर में डॉक्टर ने मुझसे कई सवाल पूछे जिनका मैं मुश्किल से जवाब दे पाया।— ऑपरेशन रूम में एक अजीब-सी शांति थी। बैकग्राउंड में भगवान शिव का एक मधुर मंत्र बज रहा था । मैंने धीमे से पूछा, “सर, क्या मेरी दृष्टि वापस आ जाएगी?” डॉक्टर ने शिव जैसी स्थिरता और आत्मविश्वास से कहा, “100%, बेटा — मुझ पर भरोसा रखो।”

उस समय मुझे अपने सहकर्मियों से जो सहयोग मिला — वह मेरे लिए किसी संजीवनी से कम न था। उस भय के बीच, आस्था थी। उस अनिश्चितता में, करुणा की एक झलक। यह शहर आज भी घर नहीं बना। पर इसने जीवन का एक ऐसा अध्याय जरूर लिखा — जिसने मुझे सिखाया कि कैसे जीवित रहना है। कैसे चुपचाप लड़ना है और कैसे संघर्ष करके ऊपर उठना है। चेन्नई ने मेरा स्वागत नरमी से नहीं किया, लेकिन इसने मुझे उससे भी ज्यादा मज़बूत बना दिया, जितना मैं सोच भी नहीं सकता था।

संवेदीकरण एवं सुदृढ़ीकरण पर 21.11.2024 को आयोजित इंटरैक्टिव कार्यशाला

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के कार्यों के संवेदीकरण एवं सुदृढ़ीकरण पर 21.11.2024 को आयोजित इंटरैक्टिव कार्यशाला सत्र। इस इंटरैक्टिव सत्र में भाग लेते हुए श्री एस. वेल्लियंगिरी, आईएएएस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और अन्य वर्ग अधिकारी/ सरकारी कार्यों की लेखापरीक्षा में सीएजी की भूमिका के बारे में बताते हुए श्री ए. अब्राहम जुदाह शेफास, आईएएएस, वरिष्ठ उप महालेखाकार ।

वाद-विवाद ("पट्टिमंड्रम") "दैनिक जीवन में, सामाजिक वेबसाइट - वरदान या अभिशाप"

दिनांक **21.11.2024** को प्रधान महालेखाकार (ले व हक) कार्यालय के एजीओआरसी हॉल में आयोजित वाद-विवाद ("पट्टिमंड्रम") "दैनिक जीवन में, सामाजिक वेबसाइट - वरदान या अभिशाप" वाद-विवाद के लिए निर्णायक के रूप में श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है

सुमित्रानंदन पंत

स्वर्णिम भारत-विरासत और विकास

अभिषेक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

(तिरुवनंतपुरम नराकास द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध)

"भारत मानव जाति का पालना है, मानव भाषा का जन्मस्थान है, इतिहास की जननी है,
किंवदंतियों की दादी है और परम्परा की परदादी है।"

मार्क ट्वेन की इन पंक्तियों से भारत भूमि की महत्ता को समझा जा सकता है। आदिकाल से ही, भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए विश्व विख्यात रही है। यहाँ महान विभूतियों नें जन्म लिया और अपने कार्यों से निरंतर भारत भूमि को गौरवान्वित किया है। हमारी संस्कृति हमेशा से ही पूरे विश्व को एक परिवार मानते आई है-

" अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतषाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।"

भारत की पहचान उसकी सुदृढ़ सांस्कृतिक विरासत रही है। भारत हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तक सभी विविधताओं और विशेषताओं को समेटे हुआ है और उसकी प्रत्येक संतान भारतीय है।

बिना सांस्कृतिक प्रगति के विकास अधूरा है, आज भारत विश्व पटल पर अपना परचम लहरा रहा है इसका श्रेय हमारे स्वर्णिम अतीत को भी जाता है। आज हम गुलामी की मानसिकता से ऊपर उठकर, पूरे विश्व से कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। भारत लोकतंत्र की जननी रही है, हमारी सामर्थ्य में यह दिखाया है कि हमारे पास आज

स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक हमारे पास अनेकानेक चुनौती रही है यथा - शिक्षा का, कृषि का, व्यापार का, अर्थव्यवस्था का । परन्तु हमने अपने अथक परिश्रम से हर परिदृश्य में भारत का मान ऊँचा किया है चाहे वह विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में
से एक बनने की बात हो, अंतरिक्ष में पहुँचने की बात हो या मेडिकल विकास की। आज पूरे विश्व में सर्वाधिक युवा जनसंख्या भारत के पास है। कहते हैं, जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है। भारतीय युवाओं की प्रगति से आज कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है - चाहे वह विश्व की सबसे बड़ी कंपनी के CEO पद को संभालने की बात हो या विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष बनने की बात हो, (ऋषि सुनक का ब्रिटेन के PM) ।

स्वर्णिम भारत की कल्पना- किसी एक अवयवों से साकार नहीं हो सकती, अपितु प्रत्येक नागरिक को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सम्पूर्ण चेष्टा से करना होगा। वेदों से लेकर, योग एवं आधुनिकता आज पूरा विश्व, गीता के श्लोकों को आत्मसात कर रहा है, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस - 21 जून के रूप में भारतीय संस्कृति को अपना रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में जब भारत ने कोविड काल में कई देशों में करोड़ों वैक्सीन को भिजवाया तब यह साबित हो गया कि भारतीय विकास केवल अर्थव्यवस्था या पैसों की नींव पर नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों पर टिकी है जहाँ विरासत भी है एवं विकास भी है।

आज पूरे विश्व की नजर भारत पर आ टिकती है, जब भी आधुनिकता रूपी राक्षस संस्कृति और सभ्यता को आघात पहुँचाता है। आज प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी सांस्कृतिक और गौरवशाली परंपरा से विश्व पटल पर अपना नाम अंकित कर रहा है।

हमारी जिम्मेदारी है कि, अपने अधिकार एवं कर्तव्यों के पूर्ण उपयोग से भारत को स्वर्णिम भारत बनाएँ जहाँ विरासत भी है एवं विकास भी है।

"धन्यः अस्मि भारतत्वेन"
- भाग्य है मेरा कि मैं भारतीय हूँ।"

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) कार्यालय द्वारा 23.11.2024 को आयोजित ऑडिट रन

ऑडिट रन में भाग लेते हुए श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) और श्री एस. वेल्लियंगिरी, आईएएएस, प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा और भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा कार्यालयों के वर्ग अधिकारी, अधिकारी एवं कर्मचारी गण ।

ऑडिट दिवस

दिनांक **25.11.2024** को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के ऑपन एयर ऑडिटोरियम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन/ तिरु एम. अप्पावु, माननीय अध्यक्ष, तमिलनाडु विधान सभा सरकार, श्री के. पिच्चांडी, माननीय उपसचिव, तमिलनाडु विधानसभा सरकार, डॉ. के. श्रीनिवासन, प्रधान सचिव, तमिलनाडु सरकार, लोक लेखा समिति के माननीय अध्यक्ष तिरु के. सेल्वप्पेरुन्तगै और अन्य गणमान्य व्यक्ति को सांस्कृतिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया

एक पन्ना सरकारी बाबू की डायरी से

अभिषेक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आनंद या पीड़ा में कभी गहरी कहानियाँ लिखी ही नहीं गयी, सबने चुना है उसके बाद का एकांत।वह समय जब आप स्वयं से मिलते हो, एक ऐसे शख्स से जो सिर्फ आप में है और आपसे है। उस व्यक्ति को समय देना कितना आवश्यक है यह आप तब ज्यादा महसूस करते हैं जब व्यस्तता में गुजरते वक्त का ठहराव आपको पुराने पलों की भीगी-भीगी सी याद दिला जाती है। एक मित्र ने सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर टैग कर दिया था, यादें खास थी। सुंदर दृश्य, मनोहर वातावरण और ताजी हँसी ठिठोली। अपने ऑफिस कुर्सी पर बैठे बैठे ही, शर्मा जी नें सारी यात्राएँ पूरी कर ली, उस रंगीन तस्वीर में अपनी ब्लैक एंड व्हाइट ज़िंदगी तलाशने लगे।

कम उम्र में ही सरकारी नौकरी लग गई थी, जल्दी शादी हो गई फिर घर में एक लक्ष्मी का आगमन। नन्ही किलकारियों के साथ वक्त कितनी तेजी से बीता पता ही नहीं चला। पारिवारिक सहयोग और ईश्वरीय कृपा से सब बढ़िया गुजरा। बेटी पढ़-लिख कर विलायत में सेटल हो गई थी। लोग कहते हैं अब घर पर सिर्फ बूढ़ा बूढ़ी रहते हैं। ऑफिस दूसरा घर था उनका, लगभग 37 वर्षों का लंबा अनुभव। न केवल स्टाफ, ऑफिस का कोना कोना तक उनसे परिचित था। साफ सुथरा उनका कक्ष, दीवार पर कुछ महान विभूतियों की तस्वीर, टेबल पर एक फोटो फ्रेम में अपने कंधे पर बिठाए बिटिया के बचपन की एक तस्वीर, और बाहर लटकती तख्ती पर ओहदे संग लिखा उनका नाम। टेबल पर बिखरी फाइलों की भीनी-भीनी खुशबू जा रही थी, कम्प्यूटर आ गया था। तकनीक की दुनिया आने वाली है यह बात बहुत जल्द समझ लिया था। खुद को कभी आउटडेटेड नहीं होने दिया । समय के साथ हमेशा खुद को अपडेट रखा। कुशल कार्य क्षमता और हँसमुख स्वभाव, एक दिन भी ऑफिस नहीं आते तो उनकी कमी महसूस होने लगती। 1 साल रिटायरमेंट को बाकी थे मगर लगन ऐसी जैसे कल की ही ज्वाइनिंग हो।

सभी के सुख-दुख में शामिल हुए, मगर अपने चेहरे पर चिरस्थाई मुस्कान बनाए रखा, उनको कोई तकलीफ हो ऐसा कभी पता ही नहीं चलने दिया। कोई साथी रिटायर होता तो मन भारी हो जाता, फिर किसी नए लड़के को ज्वाइन करते देख ढूंढ लेते थे अपनी खोई जवानी। न केवल कार्य बल्कि निजी चीजों में भी, नए लड़कों में अपने अनुभव को पूरा साझा करना, उनका यही सहज व्यवहार उन्हें विशेष बनाता था। यही कुल मिलाकर उनकी जमा पूँजी थी।सरकारी बाबू होना महज इत्तफाक थोड़ी है जिम्मेदारियों का ताना बाना होना चाहिए, जब सेवा में आए थे तो इतनी प्रतियोगिता नहीं थी, मगर जन सेवाभाव और पूर्ण इच्छाशक्ति की कसौटी तो थी ही। आज तो ये आलम है कि सरकारी नौकरी पा लेना जैसे ईश्वर को पा लेना।

ऑफिस की सारी कहानियाँ छोड़, घर वापस आकर परिवार से मीठा संवाद और धीमी आँच पर खौली एक कड़क चाय, दिनभर के थकान का रामबाण था। बालकनी में लगाए फूलों की क्यारियों बीच धर्मपत्नी संग ढूंढ लेते थे सुकून के कुछ पल। तालियों की कोई गड़गड़ाहट नहीं है इनके लिए, ऐसे लोगों ने चुना है बुनियाद में ईट टांकने का काम। सुबह फिर निकल पड़ते हैं, रोमांचित नहीं करने वाली, हर रोज लगातार की जाने वाली, केवल स्वयं के करीब आने वाली यात्राओं पर।

दिनांक 20.02.2025 को आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला

दामाद की दृष्टि से

दीपक साहू
श्रीमती सुललिता रेड्डी(उप निदेशक) के दामाद

भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में दामाद को अधिकतर बेटे का दर्जा दिया जाता है। जैसे बहू, ससुराल का हिस्सा स्वत: बन जाती है, दामाद को भी अपने ससुराल से जुड़ जाना चाहिए।

परंतु ऐसा होता है क्या? कतई नहीं। लेकिन मैंने पाया कि जब दामाद सास की बातों को सुनता है, समझता है तो यह रिश्ता भी प्यार और विश्वास से भर सकता है। मेरे लिए मेरी सास, सिर्फ मेरी पत्नी की माँ नहीं परंतु एक संवेदनशील, सुलझी हुई समझदार मार्गदर्शक है जो हमारी पीढी को बखूबी समझती है। मुझे लगता है कि वो मेरे एवं उनके पीढ़ी के बीच की सेतु है ।

वह हम पर कुछ थोपती नहीं। अपने पीढ़ी के मूल्यों का, संस्कारों का, अच्छाइयों का बखान कर हमें नीचा नहीं दिखाती। बदलते समय के साथ उन्होंने समझौता कर लिया है, खुशी से-मजबूरी में नहीं। मुझे उनमें अपनी माँ की छाया दिखाई देती है, जो चार साल पहले मुझे छोड़ कर चली गई। इसलिए मैं उन्हें मम्मी कहकर पुकारता हूँ ।

जब भी मेरा मेरी पत्नी से लड़ाई या असहमति होती है, तो वो पक्षपात नहीं करती । अपने अनुभव के आधार पर हम दोनों को समझाती हैं। उनकी वजह से मुझे महिलाओं की सोच, डर, भावनाओं इत्यादि के बारे में समझ आया। यह मुझे ज़रूर बेहतर पति और संवेदनशील व्यक्ति बनने में मदद करेगा । अधिकतर उनका मत मेरी तरफ होता है। इसलिए मेरी पत्नी उनका बीच बचाव कई बार पसंद नहीं करती । हम दोनों किसी भी विषय पर बात करने लगते हैं, सरलता से। हम एक दूसरे से कई विषयों में सुझाव भी लेते हैं। इस व्यवहार से मेरी पत्नी को भी संतोष और सुरक्षा की भावना मिलती है।

मेरी सास, दामाद के रूप में मुझे पाकर खुद को भाग्यशाली समझती हैं, वहीं मैं भी खुद को सौभाग्यशाली समझता हूँ। क्योंकि उनकी वजह से दोनों परिवारों में सरलता से समन्वय बन गया। अब हम एक परिवार हैं। मैं यही कहूँगा कि सास की बात सुनना एक दामाद के लिए रिश्तों को मज़बूत करने का प्रभावशाली माध्यम है। यह रिश्ता केवल औपचारिकता से नहीं, बल्कि आपसी समझ, सम्मान और स्नेह से फलता है जिससे सशक्त और सुखद परिवार का निर्माण होता है ।

कन्याकुमारी का त्रिवेणी संगम

एस.सुधावल्ली
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत के सुदूर दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी अपने भौगोलिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। इसके सबसे अनमोल स्थलों में से एक त्रिवेणी संगम है, जहाँ तीन सागर—अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर—मिलते हैं। यह अनूठा संगम न केवल एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है, बल्कि गहरा धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखता है, जो दुनिया भर से तीर्थयात्रियों, पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करता है।

1. भौगोलिक महत्व

भौगोलिक दृष्टिकोण से, कन्याकुमारी भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे दक्षिणी छोर है, जो इसे भारत की प्राकृतिक सीमाओं के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बिंदु बनाता है। ऐतिहासिक रूप से, कन्याकुमारी का तट हिंद महासागर में नौवहन करने वाले नाविकों और व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल रहा है। इस रणनीतिक स्थान ने वैश्विक समुद्री मानचित्रों और प्राचीन व्यापारिक मार्गों के इतिहास में कन्याकुमारी को प्रमुखता प्रदान की है।

2. आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व

सदियों से, त्रिवेणी संगम हिंदुओं के लिए अत्यधिक धार्मिक महत्व रखता है। हिंदू धर्म में, नदियों के संगम को अत्यंत पवित्र माना जाता है, और कन्याकुमारी स्थित त्रिवेणी संगम भी इसका अपवाद नहीं है। ऐसा माना जाता है कि अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर का मिलन प्रकृति की विभिन्न ऊर्जाओं और शक्तियों के मिलन का प्रतीक है, जो ब्रह्मांड की एकता का प्रतीक है।

भक्त अक्सर त्रिवेणी संगम के जल में पवित्र डुबकी लगाने के लिए इस स्थल पर आते हैं, यह विश्वास करते हुए कि यह उनके पापों का शमन करता है और उनकी आत्मा को शुद्ध करता है। शुद्धिकरण का यह कार्य इलाहाबाद स्थित प्रसिद्ध त्रिवेणी संगम से जुड़ी मान्यता के समान है, जहाँ गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती का संगम होता है। कन्याकुमारी में यह संगम उन तीर्थयात्रियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए आशीर्वाद चाहते हैं।

इसके अलावा, कन्याकुमारी देवी कुमारी अम्मन (पार्वती का एक रूप) से भी गहराई से जुड़ी हुई है और ऐसा माना जाता है कि त्रिवेणी संगम का पवित्र जल उनकी कृपा से ओतप्रोत है। पास ही स्थित कुमारी अम्मन मंदिर इस क्षेत्र की आध्यात्मिक आभा को और भी बढ़ा देता है। हर साल हज़ारों भक्त देवी के दर्शन करने और उस दिव्य ऊर्जा का अनुभव करने के लिए इस मंदिर में आते हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि यह क्षेत्र सर्वत्र व्याप्त है।

3. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रभाव

त्रिवेणी संगम का सांस्कृतिक महत्व इसके धार्मिक महत्व से कहीं आगे जाता है। कन्याकुमारी विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है, क्योंकि यह एक प्रमुख तटीय क्षेत्र है जहाँ इतिहास भर व्यापारियों, खोजकर्ताओं और शासकों का आना-जाना लगा रहता था। इस क्षेत्र पर तमिल, केरल और यहाँ तक कि प्राचीन भारत के साथ व्यापारिक संबंध रखने वाले यूनानियों और रोमनों जैसी दूरस्थ सभ्यताओं का भी प्रभाव रहा है।

त्रिवेणी संगम की उपस्थिति ने कन्याकुमारी की लोककथाओं और सांस्कृतिक आख्यानों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस मंदिर की उत्पत्ति बाणासुर नामक राक्षस की कथा से जुड़ी है, जिसे एक वरदान के कारण केवल एक कुंवारी कन्या ही मार सकती थी। उसे हराने के लिए, देवी पार्वती ने कन्या कुमारी के रूप में अवतार लिया और भगवान शिव से विवाह करने के लिए तपस्या की। यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है, मंदिर स्थल पुराण के अनुसार, मूर्ति की स्थापना भगवान विष्णु के अवतार भगवान परशुराम ने की थी।

इसके अलावा, त्रिवेणी संगम का उल्लेख अक्सर प्राचीन यात्रियों, कवियों और इतिहासकारों के लेखन में मिलता है, जो इस प्राकृतिक सौन्दर्य और इसकी सांस्कृतिक विविधता पर अचंभित होते थे। तीन समुद्रों के संगम से निर्मित शांत वातावरण ने कलाकारों, कवियों और लेखकों को एकता, प्रकृति और आध्यात्मिकता के विषयों का पता लगाने के लिए भी प्रेरित किया है।

4. पर्यटन और आर्थिक महत्व

त्रिवेणी संगम की मनोरम सुंदरता और आध्यात्मिक आकर्षण कन्याकुमारी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाते हैं। हर साल लाखों पर्यटक त्रिवेणी संगम से सूर्योदय और सूर्यास्त के मनमोहक दृश्य देखने कन्याकुमारी आते हैं। तीन समुद्रों की अथाह जलधाराओं की पृष्ठभूमि में सूर्योदय या सूर्यास्त का दृश्य कई पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

कन्याकुमारी में पर्यटन उद्योग मुख्यतः इसी अनूठी भौगोलिक विशेषता के कारण फल-फूल रहा है। विवेकानंद रॉक मेमोरियल, तिरुवल्लुवर प्रतिमा और कुमारी अम्मन मंदिर जैसे आकर्षणों के साथ त्रिवेणी संगम, कन्याकुमारी के पर्यटन सर्किट का केंद्र बिंदु है। परिणामस्वरूप, स्थानीय अर्थव्यवस्था को पर्यटन से काफी लाभ होता है, जहाँ कई होटल, रेस्टोरेंट और छोटे व्यवसाय पर्यटकों की बढ़ती संख्या की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

त्रिवेणी संगम का सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक महत्व तो है ही, साथ ही इसके पर्यावरणीय महत्व को भी समझना ज़रूरी है। जिस क्षेत्र में तीन समुद्र मिलते हैं, वह समुद्री जीवन की समृद्ध विविधता का घर है, और कन्याकुमारी के आसपास का जल उन स्थानीय मछुआरा समुदायों का पोषण करता है जो अपनी आजीविका के लिए समुद्र पर निर्भर हैं।

इस तटीय क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना बेहद ज़रूरी है, क्योंकि किसी भी तरह की गड़बड़ी से समुद्री पारिस्थिति की तंत्र और उस पर निर्भर लोगों पर दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। पर्यटन में वृद्धि के साथ, कन्याकुमारी के तटरेखा की प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता की रक्षा के लिए स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना और भी ज़रूरी हो गया है।

कन्याकुमारी का त्रिवेणी संगम सिर्फ़ एक भौगोलिक चमत्कार नहीं है—यह विविध ऊर्जाओं, संस्कृतियों और इतिहास के संगम का प्रतीक है। इसके आध्यात्मिक महत्व ने इसे एक तीर्थस्थल बना दिया है, जबकि इसकी प्राकृतिक सुंदरता इसे यात्रियों के लिए एक दर्शनीय स्थल बनाती है। त्रिवेणी संगम न केवल यहाँ आने वालों के दिलों में एक विशेष स्थान रखता है, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्मिकता के अंतर्संबंध की याद भी दिलाता है।

जब कोई त्रिवेणी संगम के किनारे खड़ा होकर अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के अनंत विस्तार को एकाकार होते हुए देखता है, तो प्रकृति के साथ एकता का एहसास अद्भुत हो जाता है। यही कन्याकुमारी का असली सार है—एक ऐसी जगह जहाँ समुद्र मिलते हैं, और जहाँ मानव आत्मा और ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।

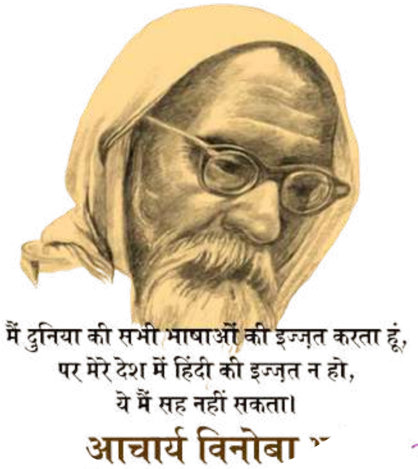

बॉम्बे में टेलर स्विफ्ट: जादू, संगीत और मंत्रमुग्ध कर देने वाले पलों की एक रात

अजय यादव
डी ई ओ

12 नवंबर 2024 रात हलचल से भरा बॉम्बे (मुंबई) महानगर विद्युत्मय हो गया जब शहर का प्रतिष्ठित वानखेड़े स्टेडियम ध्वनि, प्रकाश और तमाशे के एक अलौकिक क्षेत्र में बदल गया। अवसर? टेलर स्विफ्ट का एक अनूठा संगीत कार्यक्रम, जिसने हज़ारों प्रशंसकों—चौड़ी आँखों वाले किशोरों से लेकर हर उम्र के समर्पित स्विफ्टीज़—को भावनाओं, ऊर्जा और आकर्षण से भरी एक अविस्मरणीय रात के लिए एक साथ लाया।

स्टेडियम का रूपांतरण: एक दृश्यात्मक सिम्फनी

वानखेड़े स्टेडियम की ओर बढ़ते हुए, हर किसी को सबसे पहले इस स्टेडियम के परिवर्तन की भव्यता ने प्रभावित किया। आमतौर पर यह क्रिकेट स्टेडियम, जो अपनी धमाकेदार खेल भीड़ के लिए जाना जाता है, अब दुनिया के सबसे बड़े पॉप सितारों में से एक के लिए एक विशाल मंच में बदल गया था। बाहरी हिस्सा ऊँची-ऊँची एलईडी स्क्रीनों से जगमगा रहा था, जिन पर स्विफ्ट थीम पर एनिमेटेड ग्राफिक्स दिखाई दे रहे थे—घुमावदार आकाशगंगाएँ, फड़फड़ाती तितलियाँ, और गीतात्मक उद्धरण, जो दर्शकों के अंदर कदम रखने से पहले ही एक स्वप्निल माहौल बना रहे थे।

स्टेडियम के अंदर, माहौल एकदम जादुई था। मैदान चमकते रिस्टबैंडों का एक विशाल सागर था, जिनमें से प्रत्येक शो की धड़कन और रंग परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठा रहा था, जिससे रोशनी का एक जीवंत सागर बन गया था जो लहरों की तरह हिलता और झिलमिलाता था। मंच अपने आप में आधुनिक डिज़ाइन का एक उत्कृष्ट नमूना था—एक वास्तुशिल्प चमत्कार जिसमें चिकने काँच के पैनल, घूमते हुए प्लेटफ़ॉर्म और विशाल घुमावदार एलईडी स्क्रीन शामिल थे जो कलाकार को एक डिजिटल आलिंगन में घेरे हुए थे।

प्रकाश व्यवस्था अपने आप में नृत्यकला का एक उत्कृष्ट नमूना थी। बिजली के नीले, गहरे लाल और हल्के बैंगनी रंग की जीवंत किरणें रात के आकाश में संगीत के साथ ताल मिलाते हुए भीड़ के ऊपर नाच रही थीं। टेलर के हर कदम पर नज़र रखने वाली स्पॉटलाइट से लेकर स्टेडियम की छत पर जटिल आकृतियाँ बुनते लेज़र पैटर्न तक, प्रकाश व्यवस्था ने रंग और गति के एक निरंतर विकसित होते कैनवास को चित्रित किया जिसने भीड़ को मंत्रमुग्ध कर दिया।

वीआर अनुभव: वास्तविकता और कल्पना का धुंधलापन

इस कॉन्सर्ट की सबसे चर्चित विशेषताओं में से एक अत्याधुनिक वीआर (वर्चुअल रियलिटी) एकीकरण था जिसने एक लाइव शो की परिभाषा ही बदल दी। प्रवेश द्वार पर प्रशंसकों को हल्के वीआर चश्मे दिए गए, जो स्टेडियम के नेटवर्क से सहजता से जुड़े थे। जब टेलर ने अपना गाना "ऑल टू वेल" गाया, तो स्टेडियम की स्क्रीन टिमटिमा उठीं और अचानक, पूरा स्थल 360-डिग्री वीआर अनुभव में डूब गया।

अपने चश्मों के ज़रिए, प्रशंसक एक रहस्यमयी दुनिया में पहुँच गए, जिसमें स्विफ्ट की गीतात्मक कहानी के साथ मुंबई के शहरी परिदृश्य के तत्वों का मिश्रण था। विशाल डिजिटल मोर ऊपर उड़ रहे थे, जो जुगनुओं की तरह नीचे तैरते चमकते संगीतमय स्वरों के साथ गुंजायमान थे। जैसे ही टेलर यादों और दिल टूटने के बारे में गा रही थीं, वीआर दृश्य बदल रहे थे, प्रेमियों के मिलने, बिछड़ने और यादों को ताज़ा करने का एक सिनेमाई मोंटाज दिखा रहे थे—यह सब चांदनी में नहाए मुंबई के प्रतिष्ठित स्थलों की पृष्ठभूमि में सेट किया गया था।

वीआर इफेक्ट्स ने हर गाने को बेहद निजी और मनमोहक बना दिया, जिससे एक ऐसा साझा अनुभव बना जो सामान्य कॉन्सर्ट की सीमाओं से परे था। चाहे शहर के ऊपर उड़ना हो या आभासी तारों भरे आसमान के नीचे बैठना हो, इस तकनीक ने कलाकार और दर्शकों के बीच आत्मीयता का एक नया आयाम स्थापित किया।

संगीत: भावनाओं का सफ़र

बेशक, संगीत के बिना इस तमाशे का कोई मतलब नहीं होता। टेलर स्विफ्ट की आवाज़ ने माहौल को क्रिस्टल की स्पष्टता से भर दिया, उनके बैंड ने बेजोड़ तालियाँ बजाईं, और उनका प्रदर्शन भावनात्मक रूप से जोश से भर गया। "फियरलेस" के जोशीले गायन से शुरुआत करते हुए, उन्होंने तुरंत एक उल्लासपूर्ण स्वर स्थापित किया, जिसने भीड़ में ऊर्जा भर दी।

सेटलिस्ट उनकी डिस्कोग्राफी के माध्यम से एक सावधानीपूर्वक तैयार की गई यात्रा थी, जिसमें "बैक टू दिसंबर" और "लवर्स" जैसे दिल को छू लेने वाले गीतों को "शेक इट ऑफ" और "यू बिलॉन्ग विद मी" जैसे जोशीले गानों के साथ मिलाया गया था। जैसे-जैसे रात आगे बढ़ी, माहौल खुशी के जश्न और मार्मिक चिंतन के बीच सहजता से बदलता गया, जिसने मानवीय अनुभवों के पूरे स्पेक्ट्रम को कैद कर लिया।

कॉन्सर्ट का एक सबसे खास पल "Enchanted" के दौरान आया, जब मंच कोमल सुनहरी रोशनी में नहाया हुआ था, और भीड़ एक साथ झूम रही थी, अपने फोन सितारों की तरह ऊपर उठाए हुए। टेलर का दर्शकों के साथ जुड़ाव स्पष्ट था - उनकी मुस्कुराहट, सूक्ष्म इशारे और गीतों के बीच दिल को छू लेने वाली कहानी ने भीड़ की विशालता के बावजूद आत्मीयता की भावना पैदा की।

भीड़: भक्ति का एक ताना-बाना

भीड़ की ऊर्जा उस रात की एक और खासियत थी। हर वर्ग के प्रशंसक इकट्ठा हुए थे—चमकदार पोशाक पहने कॉलेज के छात्र, हाथ से बने बैनर पकड़े परिवार, और बुज़ुर्ग प्रशंसक जिन्होंने टेलर के शुरुआती दिनों से ही उनके सफ़र को देखा था। वहाँ एक सामुदायिक भावना, संगीत और उस पल के लिए एक साझा आनंद और श्रद्धा थी। ब्रेक के दौरान स्टेडियम में "टेलर! टेलर!" के नारे गूंज रहे थे, और ख़ासकर "लव स्टोरी" जैसे क्लासिक गानों के दौरान, सहज ही एक साथ गाने शुरू हो गए। भीड़ का उत्साह संक्रामक था, जिसने एक ऐसा विद्युतीय माहौल बनाया जो उत्सुकता और उल्लास से भरा हुआ था।

एक यादगार रात

जैसे ही कॉन्सर्ट "शेक इट ऑफ" के लुभावने प्रदर्शन के साथ समाप्त हुआ, कंफ़ेद्दी की बौछारें फूट पड़ीं और दर्शकों पर चमकती चाँदी और सोने की बौछारें बरसने लगीं। आतिशबाज़ी ने मुंबई के आसमान को जगमगा दिया, जिसने पहले से ही जगमगाती शाम में रंगों की एक और किरण भर दी। वानखेड़े स्टेडियम से बाहर निकलते हुए, प्रशंसक उत्साह से भरे हुए थे, उनके चेहरे खुशी और आश्चर्य से चमक रहे थे। बॉम्बे में टेलर स्विफ्ट का कॉन्सर्ट सिर्फ़ एक संगीत कार्यक्रम नहीं था; यह एक सांस्कृतिक उत्सव था जिसने तकनीक, कलात्मकता और मानवीय जुड़ाव को एक शानदार प्रदर्शन में समाहित कर दिया। मेरे सहित, जो लोग वहां मौजूद थे, उनके लिए यह एक जादुई रात थी - जिसे आने वाले वर्षों तक याद रखा जाएगा, यह मुंबई की नाइटलाइफ की जीवंत टेपेस्ट्री में एक चमकता हुआ रत्न है और वैश्विक संगीत आइकन के साथ भारत का लगातार बढ़ता प्रेम संबंध है।

वानखेड़े में सचिन तेंदुलकर का आखिरी टेस्ट: एक क्रिकेट दिग्गज को विदाई

सव्यसाची भगत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

14 नवंबर, 2013 को क्रिकेट जगत ने एक युग का अंत देखा। मुंबई का प्रतिष्ठित वानखेड़े स्टेडियम न केवल एक और टेस्ट मैच की मेजबानी कर रहा था; बल्कि यह सचिन रमेश तेंदुलकर की विदाई का मंच भी था—जो यकीनन इस खेल को गौरवान्वित करने वाले अब तक के सबसे महान क्रिकेटर हैं। माहौल उत्साह, पुरानी यादों और एक अविश्वसनीय क्षति के एहसास से भरा हुआ था।

सचिन के लिए, यह महज एक और मैच से कहीं बढ़कर था। यह उनके दो दशकों से भी ज़्यादा लंबे करियर का आखिरी अध्याय था, जिसने दुनिया भर में उनके बल्ले की कलात्मकता से लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे ही वानखेड़े की फ्लडलाइट्स में दर्शक उमड़े, नीली जर्सी और भारतीय झंडों का एक समुद्र अपने नायक को विदाई देने के लिए तैयार था।

आखिरी पारी: एक दिग्गज की आखिरी पारी

तेंदुलकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच आखिरी बार मैदान पर उतरे, उनका शांत स्वभाव उस पल के गहरे महत्व को झुठला रहा था। उनके हर कदम पर "सचिन! सचिन!" के नारे गूंज रहे थे—यह भारतीय क्रिकेट पर उनके अद्वितीय प्रभाव और प्रशंसकों के दिलों में उनके द्वारा जगाई गई भावनाओं का प्रमाण था।

वेस्ट इंडीज के खिलाफ खेला गया यह मैच, तेंदुलकर की आखिरी पारी के तमाशे के आगे फीका पड़ गया। हर बार जब वह गेंद का सामना करते, तो स्टेडियम में सन्नाटा छा जाता, मानो श्रद्धा से अपनी सांसें रोक ली हों। तेंदुलकर की महारत अभी भी साफ़ दिखाई दे रही थी; उन्होंने अपने स्ट्रोक्स में वही शान दिखाई, वही तीक्ष्ण क्रिकेटिया बुद्धि जिसने उन्हें घर-घर में मशहूर बना दिया था।

लेकिन जल्द ही, अपरिहार्य आ पहुँचा।

आखिरी आउट: समय में रुका हुआ एक पल

68वें ओवर में, रवि रामपॉल की गेंद का सामना करते हुए, तेंदुलकर ने एक अनिश्चित शॉट खेला और विकेटकीपर के हाथों कैच आउट हो गए। उसके बाद छाए सन्नाटे में गेंद के दस्तानों से टकराने की आवाज़ बहरी कर देने वाली थी। समय मानो थम सा गया। सचिन आउट हो गए।

दर्शकों की साँसें थम सी गईं, एक दर्दनाक सन्नाटा छा गया और भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। कैमरे ने उस पल को कैद कर लिया जब तेंदुलकर की आँखों में उनकी भावनाओं की गहराई झलक रही थी—वर्षों का अथक समर्पण, विजय और संघर्ष उनके सामने घूम गया। जैसे ही वह पवेलियन की ओर लौटे, तालियाँ और तेज़ हो गईं, खड़े होकर तालियाँ बजाई गईं जो कई मिनट तक चलीं।

प्रशंसक, टीम के साथी और यहाँ तक कि विरोधी भी इस महान बल्लेबाज़ के सम्मान में खड़े हो गए। भावनात्मक भार साफ़ दिखाई दे रहा था। स्टैंड में मौजूद कई लोगों के चेहरे पर आँसू बह रहे थे; कुछ ने अजनबियों को गले लगाया, एक दिग्गज की विदाई के कड़वे-मीठे एहसास को साझा किया।

वापसी: एक नायक की विदाई

जैसे ही तेंदुलकर पवेलियन की ओर बढ़े, तालियाँ कम नहीं हुईं। हर कदम भारी लेकिन गर्व से भरा लग रहा था। दर्शकों के जयकारों की गूँज वानखेड़े स्टेडियम में उनकी विरासत को समर्पित एक सिम्फनी की तरह गूंज रही थी। दोनों टीमों के खिलाड़ी क्रिकेट इतिहास के एक युग के अंत को स्वीकार करते हुए, उस्ताद को सलामी देने के लिए बाउंड्री के पास कतार में खड़े हो गए।अंदर, उस पल का बोझ सचिन पर आखिरकार हावी हो गया। उनके चेहरे पर कमजोरी साफ झलक रही थी, क्रिकेट के भगवान के मानवीय पक्ष की एक दुर्लभ झलक। साथी क्रिकेटर, जिनमें से कई उन्हें आदर्श मानते हुए बड़े हुए थे, अपनी आँखें पोंछते देखे जा सकते थे।

विदाई भाषण: एक भावपूर्ण विदाई

फिर वह पल आया जिसका सभी को इंतज़ार था—सचिन का विदाई भाषण। मैदान पर खड़े, हाथ में बल्ला लिए, भावनाओं से चमकती आँखों में, तेंदुलकर ने दर्शकों और पूरी दुनिया को संबोधित किया।

"आज, मैं यहाँ मिली-जुली भावनाओं के साथ खड़ा हूँ—गर्व, पुरानी यादें और अपार कृतज्ञता," उन्होंने शुरुआत की। उनकी आवाज़ स्थिर लेकिन भावुक थी। "क्रिकेट मेरा जीवन रहा है, मेरा जुनून। इसने मुझे वो सब कुछ दिया है जिसका मैंने कभी सपना देखा था और उससे भी ज़्यादा। मेरे परिवार, टीम के साथियों, कोचों और ख़ासकर प्रशंसकों—इस अविश्वसनीय सफ़र में मेरे साथ चलने के लिए आपका धन्यवाद। आपका प्यार और समर्थन मेरी ताकत रहा है।"

उन्होंने अपनी साधारण शुरुआत, अभ्यास के अनगिनत घंटों, उतार-चढ़ाव और उन सपनों के बारे में बात की जिन्होंने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। "इस खेल ने मुझे आकार दिया है, मुझे धैर्य, लचीलापन और विनम्रता सिखाई है। मुझे उम्मीद है कि मैंने आपमें से कुछ लोगों को उसी जुनून के साथ अपने सपनों का पीछा करने के लिए प्रेरित किया होगा।"

घर में किसी की भी आँखें नम नहीं थीं। यहाँ तक कि सबसे गंभीर प्रशंसकों और खिलाड़ियों ने भी उनके शब्दों की ताकत महसूस की। सम्मान और प्रशंसा ज़बरदस्त थी।

सीमाओं से परे विरासत

वानखेड़े में सचिन तेंदुलकर का अंतिम टेस्ट मैच सिर्फ़ एक क्रिकेट मैच नहीं था; यह एक वैश्विक घटना थी जिसने एक क्रिकेट गाथा का समापन किया। यह इस बात की याद दिलाता है कि कैसे खेल सीमाओं को पार करता है और लोगों को एक साथ लाता है।

उस दिन मैदान से उनका जाना खेल से विदाई नहीं, बल्कि एक नए अध्याय की शुरुआत थी—जहाँ वे आने वाली पीढ़ियों को विभिन्न तरीकों से प्रेरित करते रहेंगे।

वानखेड़े में हाथ में बल्ला लिए, नम आँखों से दर्शकों का अभिवादन करते तेंदुलकर की छवि क्रिकेट की लोककथाओं में हमेशा के लिए अंकित रहेगी। यह एक ऐसे व्यक्ति की गरिमा, विनम्रता और महानता का प्रतीक है जिसने करोड़ों दिलों की उम्मीदों को अपने कंधों पर गरिमा के साथ ढोया।

आखिरकार, सचिन का आखिरी टेस्ट रनों या रिकॉर्ड्स के बारे में नहीं था। यह एक सफ़र था—उत्कृष्टता के लिए समर्पित जीवन का उत्सव, एक याद दिलाने वाला कि दिग्गज हमें कभी नहीं छोड़ते; वे उन लोगों की यादों, दिलों और सपनों में ज़िंदा रहते हैं जिन्हें उन्होंने प्रेरित किया था।

वॉकथॉन कार्यक्रम - पुदुचेरी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेप-II) द्वारा 19.11.2024 को शाखा कार्यालय पुदुचेरी में वॉकथॉन का आयोजन । वॉकथॉन कार्यक्रम में भाग लेते हुए पुदुचेरी विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, पुदुचेरी विधान सभा के माननीय उपाध्यक्ष, पुदुचेरी सरकार के जिलाधीश और पुदुचेरी सरकार के अन्य गणमान्य व्यक्ति । वॉकथॉन कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष, समूह अधिकारी, बी.ओ. पुदुचेरी के अधिकारी और कर्मचारी सदस्य भाग ले रहे हैं,वॉकथॉन में भाग लेते हुए पुदुचेरी के सरकारी स्कूल के छात्र ।

नकद पुरस्कार एवं मेरिट प्रमाण पत्र वितरण समारोह

बधाई हो

चेन्नई से तंजावुर तक एक यादगार पारिवारिक यात्रा: समृद्ध विरासत और सुंदरता की खोज

के. सुगुमारन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हाल ही में, मुझे अपने परिवार के साथ तंजावुर ज़िले की यात्रा करने का अद्भुत अवसर मिला। हम व्यस्त चेन्नई से तमिलनाडु के सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हृदयस्थल की यात्रा पर निकले। "तमिलनाडु के धान के कटोरे" के नाम से प्रसिद्ध तंजावुर अपने भव्य मंदिरों, उत्कृष्ट चित्रकलाओं और जीवंत इतिहास के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारी यात्रा आध्यात्मिक खोज, कलात्मक प्रशंसा और सुकून भरे अन्वेषण का एक सुखद मिश्रण साबित हुई।

चेन्नई से तंजावुर की यात्रा

चेन्नई से तंजावुर तक की लगभग 340 किलोमीटर की सड़क यात्रा आरामदायक और मनोरम थी। जैसे-जैसे हम ग्रामीण इलाकों से गुज़रे, हरे-भरे धान के खेत और अनोखे गाँव धीरे-धीरे तंजावुर के ऐतिहासिक आकर्षण में बदल गए। कार में उत्साह साफ़ झलक रहा था, खासकर बच्चों में, जो उस भव्यता का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे जिसके बारे में हमने बहुत सुना था।

तंजावुर के भव्य मंदिर

हमारी यात्रा का मुख्य आकर्षण निस्संदेह मंदिर थे - वास्तुशिल्प चमत्कार जो तमिल संस्कृति और **भक्ति के कालातीत प्रमाण हैं।**

- **बृहदेश्वर मंदिर:** बड़े मंदिर के रूप में भी जाना जाने वाला, यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल तंजावुर का मुकुट रत्न है। 11वीं शताब्दी में राजा राज चोल प्रथम द्वारा निर्मित, मंदिर का विशाल विमान (शिखर) क्षितिज पर छा जाता है। इसके विशाल पत्थर के गलियारों से गुजरते हुए, हम जटिल नक्काशी, विशाल नंदी प्रतिमा और दीवारों को सुशोभित करने वाले प्रभावशाली भित्तिचित्रों को देखकर दंग रह गए। मंदिर की भव्यता, इसके ऐतिहासिक महत्व के साथ मिलकर, इसे हमारे परिवार के लिए एक गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव बनाती है।
- **ऐरावतेश्वर मंदिर:** दारासुरम के पास स्थित, यह मंदिर चोल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अपनी विस्तृत मूर्तियों और पत्थर के रथ के लिए जाना जाता है। शांतिपूर्ण वातावरण और उत्कृष्ट कलात्मकता ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया।

अन्य पर्यटन स्थल

यात्रा कार्यक्रम में कई अन्य स्थान भी शामिल थे जिन्होंने हमारी यात्रा में आकर्षण और विविधता ला दी:

- **तंजावुर शाही महल और संग्रहालय:** इस परिसर में कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ और शाही स्मृति चिन्ह हैं। महल की वास्तुकला अपने आप में भव्य है, जो चोल वंश के वैभव को दर्शाती है।

• **सरस्वती महल पुस्तकालय:** पुस्तक प्रेमियों और इतिहासकारों के लिए एक अनमोल खजाना, इस प्राचीन पुस्तकालय में ताड़ के पत्तों पर लिखी पांडुलिपियाँ और कला, साहित्य और विज्ञान पर दुर्लभ ग्रंथ हैं।

• **कुंभकोणम:** तंजावुर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित कुंभकोणम अपने मंदिरों और मिठाई की दुकानों के लिए प्रसिद्ध है। हमने स्थानीय व्यंजनों का आनंद लिया और प्रसिद्ध आदि कुंभेश्वर मंदिर के दर्शन किए।

यात्रा पर विचार

तंजावुर की हमारी पारिवारिक यात्रा इतिहास, अध्यात्म और कला का एक आदर्श मिश्रण थी। इसने हमें तमिलनाडु के गौरवशाली अतीत और उसकी चिरस्थायी सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ दी। मंदिरों की भव्यता ने हमें अभिभूत कर दिया, चित्रों ने कालातीत कलात्मकता के प्रति हमारी प्रशंसा को जगाया, और जिले का समग्र वातावरण ऐसा लगा जैसे हम एक समृद्ध, जीवंत विरासत में वापस आ गए हों।

जैसे ही हम चेन्नई वापस लौटे, पवित्र मंत्रों, रंग-बिरंगी कलाकृतियों और शांत मंदिर प्रांगणों की यादें हमारे साथ रहीं। तंजावुर केवल एक पर्यटन स्थल से कहीं अधिक है - यह एक जीवंत सांस्कृतिक अनुभव है जिसकी मैं दक्षिण भारतीय परंपरा के हृदय को जानने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को पुरज़ोर सिफ़ारिश करता हूँ।

मेरे प्रिय लेखक

दीपा सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक ऐसे लेखक जिनकी रचनाओं ने मुझे हमेशा प्रेरित किया एवं समाज को जानने और जीवन को समझने में भी एक दिशा देते रहे हैं मेरे प्रिय एवं आदर्श लेखक श्री मुंशी प्रेमचंद जी है। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए प्रेमचंद "उपन्यास सम्राट" कहे जाते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय ग्राम्य जीवन, जातीय दुर्भावना, छुआछूत, मानवीय नैतिकता का यथार्थ चित्रण किया है। मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में लमही नामक ग्राम में सन् 31 जुलाई, 1880 ई० को एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री अजायब राय एवं माता का नाम आनंदी देवी था। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था, परंतु बाद में साहित्य जगत में वे प्रेमचंद के नाम से प्रख्यात हुए । प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन सन् 1901 में ही शुरू हो गया था | प्रेमचन्द ने 13 वर्ष की आयु से ही लिखना प्रारम्भ कर दिया। उनकी पहली रचना : 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) 'जमाना' नामक उर्दू पत्रिका में प्रकाशित हुई। लेखक की व्यक्तिगत जीवन के साथ साथ साहित्यिक जीवन भी आसान नहीं था। सन् 1908 में देशभक्ति से ओत - प्रोत उनकी पहली कहानी संग्रह सोजे वतन प्रकाशित हुई तो अंग्रेज सरकार ने इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर ली और इसके लेखक नवाबराय को भविष्य में लेखन न करने की चेतावनी दी। इसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा जो हिंदी साहित्य जगत में हमेशा के लिए अमर हो गए। मैंने प्रेमचंद जी की पहली रचना अपनी सातवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में पढ़ी थी

जिसका शीर्षक था 'परीक्षा'। मुझे आज भी याद है, जब मैंने वह कहानी पढ़ी थी तब मेरे बालपन के मन पर गहरा छाप पड़ा था। इस रचना में बहुत ही सुंदर सामाजिक संदेश निहित है जो हमें मानवीय मूल्यों खासकर दया, साहस और ईमानदारी के महत्व को सिखाती है। उसके बाद जब भी पाठ्यक्रम में उनकी रचना मिलती थी तो मैं बहुत ही उत्साह पूरी कहानी को पढ़ा करती थी। प्रेमचंद जी की कई रचनाएँ मैंने पढ़ी और सभी समाज को आईना दिखाने का काम करती है जैसे दो बेनों की कथा", ईदगाह, पूस की रात, गोदान, गबन, कफ़न | दो बैलों की कथा, जिसमें मनुष्य और जानवरों के बीच भावात्मक संबंध के साथ- साथ मनुष्य हो या कोई भी प्राणी, स्वतंत्रता सभी के जीवन में सर्वोपरि है।

इस कहानी के पात्र दो बैल - हीरा और मोती जिनके मालिक झूरी में आपसी स्नेह को बहुत ही खुबसूरती से लेखक ने दर्शाया है। यह एक भावुक और प्रेरक रचना है।

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य जीवन में 15 उपन्यास, 300 से अधिक कहानियाँ, कई नाटक, निबंध और बाल पुस्तकें लिखी। उनकी कहानियों का संग्रह 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित है। लेखक की रचनाएँ हिंदी साहित्य जगत में सर्वश्रेष्ठ रचनाओं की श्रेणी में आती है जैसे 'गोदान' जिसे प्रेमचंद की उत्कृष्ट रचना मानी जाती है। दूसरी रचनाएँ जैसे कर्मभूमि, रंग भूमि गबन, निर्मला सेवासदन, कफ़न, पूस की रात, बड़े घर की बेटी शामिल है। उनकी रचनाएँ मुख्य रूप से ग्रामीण और कृषक जीवन वर्ग संघर्ष और सामाजिक यथार्थवाद पर केंद्रित हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली थी। उन्होंने उर्दू और हिंदी दोनों भाषा में लिखा।
मुंशी प्रेमचंद जी के कहानियों से इतर उनके कई कोट्स भी हैं जो मुझे प्रभावित करती है जैसे-
" दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका नहीं, उसकी दौलत का है।"
" आत्मसम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म है।"
“अन्याय में सहयोग देना, अन्याय करने के ही समान है।"
“अतीत चाहे जैसी हो, उसकी स्मृतियाँ प्रायः सूखद होती है।" आदि

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। इसके अतिरिक्त उन्हें लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ का पहला अध्यक्ष चुना गया था। मुंशी प्रेमचंद को उनके उत्कृष्ट उपन्यासों के लिए " उपन्यास सम्राट" की उपाधि दी गई।

मुंशी प्रेमचंद जी एक महान लेखक the जिन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की थी। सन् 1936 में बहुत बीमार पड़ने के कारण उनकी मृत्यु 8 अक्टूबर 1936 को हो गया। लेखक अपनी लेखनी की कला एवं सोच से वे हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गए हैं।

वे मेरे प्रिय लेखक हैं क्योंकि उनकी रचनाएँ मात्र पढ्ने भर से पल भर की खुशी नहीं अपितु सोचने पर मजबूर करती है । उनके शब्दों में वह भाव है जो हमें कुछ पन्नों तक सीमित नहीं रखती बल्कि हमें हकीकत में उन दृश्यों की कल्पना करवाती है। सारे पात्रों, दृश्यों ,स्थितियों को हम महसूस कर पाते हैं और यही सबसे सुंदर बात इस लेखक के रचनाओं की है।

मेरी बिटिया,मेरी जान है

अन्नपूर्णा वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

दहकते हृदय को जैसे सुकून की बगिया मिल गई,
जब से तूने उंगलियाँ थामी, सूखी कलियाँ खिल गईं।
नन्हे-नन्हे पाँव तेरे, मेरे राहत के पल हैं,
तेरे आने से मुझमें नई उम्मीदों का कल है।
तू सपना मेरा, मेरी आशा, मेरा जहाँ है।
तेरे बिना भला, अब मेरा वजूद ही कहाँ है।
तेरी भोली सूरत को आँखों में भरकर
सीने से लगा लूं जी करता है।
तेरी अनकही बातों को सुन कर
दिल में बसा लूं जी करता है।
गोदी में भरकर जैसे समेट लूं सारी दुनियाँ।
तेरे माँ कहने से मिल गई, सारे जहाँ की खुशियाँ।

हर पल निहार कर भी भरता नहीं ये मन।
तेरा ख्याल रखने से कभी थकता नहीं ये मन।
कभी जगाती, कभी भगाती,
दिन भर सबका दिल लगाती।
तुझसे ही तो घर में रौनक- बहार है।
कड़ी धूप में जैसे ठंडी फुहार है।
रेलगाड़ी-सी रफ्तार लिए भाग रहे मेरे रात-दिन
एक पल भी जी न लगे अब तेरे बिन।
मेरी माँ, जो कहती थी
माँ बनोगी तो जानोगी
ये रिश्ता, हर रिश्ते पर भारी है।
सच में माँ बनकर ये जाना कि
माँ बनना कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है।

सब कहते, इतनी ज़हीन बिटिया, तुम्हारी बड़ी किस्मत है।
बिटिया के नैन-नक्श पर सबका अपना ही मत है-
मैं कहती, बिल्कुल मेरे जैसे चेहरे की गोलाई है।
चौड़ा माथा और मेरे जैसे ही आँखों की गहराई है।
पतिदेव कह उठते, अच्छा, गौर से देखो
प्यारी मुस्कान तो मेरे जैसी पाई है।
यूँ देखो तो,
थोड़ी तुम्हारे जैसी तीखी, थोड़ी मेरे जैसी स्वीट है,
बिटिया हम दोनों की 50-50 वाली हाइब्रिड है।

मेरी माँ कहती, नातिन तुमसे ज्यादा समझदार है।
पिताजी के लिए, ये सोमवार को आनेवाला इतवार है।
दीदी कहती, भाइयों के लिए अब राखी भी एक त्यौहार है।
पर मेरे लिए, मेरी जान मेरा पूरा संसार है।
भगवान का दिया ऐसा उपहार है,
जिस पर मेरा सारा जीवन अर्पण है।
मेरी बिटिया मेरा दर्पण है।
वो मेरा वजूद, मेरा प्राण है।
मेरी हिम्मत, मेरा स्वाभिमान है।
मेरा गौरव, मेरी शान है
मेरी ज़मीन, मेरा आसमान है।
तुझसे ही तो मेरी पहचान है।
मेरी बिटिया, केवल बेटी नहीं मेरी जान है।।

हम, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै के कर्मचारियों को अपने कार्यालय में प्रतिष्ठित और मेहनती खिलाड़ियों के होने पर गर्व है, जो हमें हमेशा गौरवान्वित करते हैं। हमारे पूरे कार्यालय की ओर से, सभी खेल सितारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सीएजी कैरम टीम प्रभारी - डी. स्वर्णलता/सहायक पर्यवेक्षक

क्रम सं	कैरम	टीम का विवरण
1	अखिल भारतीय सिविल सेवा, पुणे 17.02.2025 से 22.02.2025 तक	महिला टीम विजेता एकल सेमिफाइनल सूची लता सुन्दर, डी. स्वर्णलता, रोज़लिन
2	सी ए जी टीम 52 वीं सीनियर राष्ट्रीय स्तर नई दिल्ली	
3	सी ए जी टीम अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र 21.04.2025 से 25.04.2025	महिला टीम द्वितीय-उप विजेता

उपेन्द्र सिह तँवर/वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हॉकी टूर्नामेंट 2024-2025

हॉकी टूर्नामेंट 2024-2025		
1	5 मार्च, चेन्नई लीग 2024, चेन्नई	भाग लें
2	रिजर्व लाइन: 24 जुलाई से 27 जुलाई 2024, मदुरै	तीसरा स्थान
3	चौथा हॉकी इंडिया सीनियर राष्ट्रीय अंतर विभागीय टूर्नामेंट, 5 से 15 सितंबर 2024, पुणे	भाग लें
4	केडी सिंह बाबू अखिल भारतीय टूर्नामेंट, 7 से 12 अक्टूबर 2024, लखनऊ	उपविजेता
5	14वां हॉकी इंडिया सीनियर राष्ट्रीय टूर्नामेंट, 4 से 16 नवंबर 2024, चेन्नई	भाग लें
6	आईए एंड एडी दक्षिण क्षेत्र अंतर विभागीय टूर्नामेंट, 5 से 7 मार्च, बैंगलोर	उपविजेता
7	आईए एंड एडी अंतर क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट, 22.3.2025 से 26.3.2025, कोलकाता	भाग लें
8	14वां लक्ष्मी अम्मल अखिल भारतीय टूर्नामेंट, कोविलपट्टी, 23.5.2025 से 1.6.2025	भाग लें

फुटबॉल - उपलब्धियाँ

जॉकसन दास ए

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

	टूर्नमिंट का नाम	अवधि	कार्यक्रम का स्थान	टिप्पणियाँ
1	AIPSSCB फुटबॉल टूर्नमिंट, कोलकाता, चयन ट्रायल और कोचिंग कैंप	29.07.25 TO 31.07.25	साई ग्राउंड कोलकाता	शिविर
2	78वीं सीनियर नेशनल फुटबॉल चैंपियनशिप, संथोसे ट्रॉफी कैंप	27.10.24 to 10.11.24	जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, चेन्नई	
3	IA और AD दक्षिण क्षेत्र	04.02.25 TO 07.02.25	तिरुवनंतपुरम, केरल	धावक
4	IA और AD अंतर-क्षेत्रीय	10.03.25 TO 14.03.25	मेघालय, शिलांग	सेमीफाइनल हार गए
5	सीनियर डिवीजन, चेन्नई लीग	24.03.25 28.03.25 01.04.25 08.04.25 11.04.25 17.04.25 21.04.25 24.04.25	आईसीएफ ग्राउंड चेन्नई	

मोहम्मद रेहान

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बैडमिंटन -उपलब्धियों

- पंचकूला (हरियाणा) में आयोजित अखिल भारतीय मास्टर्स रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट 2025 (जनवरी) में मिश्रित युगल में विजेता।
- गोवा में आयोजित अखिल भारतीय मास्टर्स बैडमिंटन चैंपियनशिप 2025 (मार्च) में मिश्रित युगल में उपविजेता।
  दोनों टूर्नामेंटों में अपनी जीवनसाथी के साथ साझेदारी।
- सितंबर में पटाया (थाईलैंड) में आयोजित BWF सीनियर विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप 2025 में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयनित।

सभी खेल सितारों को बधाई हो

राजभाषा अनुभाग की गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देश के अनुपालन में, हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयास किया जा रहा है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग और कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाती है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सभी बैठकों में सक्रिय रुप से भाग लिया एवं कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया। बैठक के कार्यवृत्त राजभाषा विभाग को एवं अनुपालना रिपोर्ट मुख्यालय को भेजे जा रहे हैं। नियमित रुप से तिमाही प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन भेजी जा रही है। धारा 3(3) का शत प्रतिशत अनुपालन किया जा रहा है।

हमारे कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजपत्रित अधिकारी एवं अराजपत्रित कर्मचारी कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेकर लाभान्वित हुए। कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सहायक सामग्री एवं कार्यालय निपुणता का वितरण किया गया। प्रत्येक तिमाही को इस कार्यालय के किसी एक अनुभाग/ स्कंध का अभिमुखीकरण किया जाता है ताकि राजभाषा संबंधी कार्यों, तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने से संबंधित जानकारी या अन्य किसी असुविधाओं का निवारण किया जा सके। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अनुभागों का निरीक्षण किया गया । कार्यालाय के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना, चेन्नै द्वारा आयोजित विभिन्न हिंदी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत) के लिए नामित किया जाता है ।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के आदेशानुसार हिंदी अनुभाग के पदधारियों ने चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया एवं दिनांक **17.09.2024** से **20.09.2024** तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। दिनांक **27.09.2024** को हिंदी दिवस के समापन समारोह में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश पढ़ा गया, साथ ही विभागाध्यक्ष द्वारा "सुगंध" पत्रिका के **12**वें संस्करण का विमोचन किया गया एवं हिंदी दिवस समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। वर्ष **2024-25** के दौरान हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन करने वाले अनुभाग को हिंदी दिवस के अवसर पर शील्ड प्रदान किया गया। अन्य कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसा पत्रों के आधार पर सुगंध पत्रिका **2023** में लिखे गए सर्वश्रेष्ठ रचना के रचनाकार को हिंदी दिवस के अवसर पर शील्ड प्रदान की गई।

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलनों/संगोष्ठी आदि में इस कार्यालय की उपस्थिति हमेशा रही है। दिनांक **04.01.2025** को मैसूर, कर्नाटक में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में डॉ. एस. सुधावल्ली, सहायक निदेशक ने भाग लिया। दिनांक **26.06.2025** को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयेजित राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में भी डॉ. एस. सुधावल्ली, सहायक निदेशक ने भाग लिया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से कार्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया जाता है। नराकास द्वारा संयुक्त हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए इस कार्यालय के पदधारियों को प्रोत्साहित किया जाता है।

अप्रैल 2024 से मार्च 2025 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम(श्री/सुश्री)	पदनाम
1.	जी पार्थसारथी	स.लेप.अ
2.	जे दिनकरन	स.पर्यवेक्षक
3.	आर.रविशंकर	व.लेप.अ
4.	एस.श्रीनिवासन XIV	पर्यवेक्षक
5.	पी.चेंतामरक्षण	लिपिक
6.	वी रवि	व.लेप
7.	एम.रमेश बाबू	व.लेप.अ
8.	एन श्रीधर- II	व.लेप.अ
9.	पी.टी.बीना	स.लेप.अ
10.	टी.शिव कुमार	व.लेप.अ
11.	एस वरदराजन	व.लेप.अ
12.	आर अशोकन	स.पर्यवेक्षक
13.	सुगंधि विक्रम	स.लेप.अ (स्वै.सेवानिवृति)
14.	आर.भाग्यलक्ष्मी	व.लेप.अ
15.	जी.एन.गणेसन	व.लेप.अ
16.	आर मुरलीधरन	पर्यवेक्षक
17.	एस रविशंकर	व.लेप.अ
18.	एम.कलैकण्णन	व.लेप.अ
19.	एस.राममृतम	स.पर्यवेक्षक (स्वै.सेवानिवृत्ति)
20.	आर.शांतकुमारी	व.लेप.अ

अप्रैल 2024 से मार्च 2025 की अवधि के दौरान पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम(श्री/सुश्री)	पदनाम
1.	यू.राममूर्ति	लेखापरीक्षक
2.	दीपा सिंह	स.लेप.अ
3.	अंकित कुमार	स.लेप.अ
4.	प्रभात वी	स.लेप.अ
5.	सुमित चोपड़ा	स.लेप.अ
6.	पी.बालासुब्रमण्यन-III	व.लेप.अ
7.	आर.एस.श्रीनिवासन	व.लेप.अ
8.	एम.कलैकण्णन	व.लेप.अ
9.	एस.अंगुराज	व.लेप.अ
10.	वी.सरवनन	व.लेप.अ
11.	आसिया सुभान	व.लेप.अ
12.	रमा रामस्वामी	व.लेप.अ
13.	एस.रविशंकर	व.लेप.अ
14.	के शिवकुमार	व.लेप.अ
15.	आर.गणपति	व.लेप.अ
16.	पी.डी.मोसस	व.लेप.अ
17.	टी.ए.अनबायन	व.लेप.अ
18.	एम.रमेश बाबू	व.लेप.अ
19.	वी.लोगनाथन	व.लेप.अ
20.	एम. सेंदिलवेलन	व.लेप.अ
21.	एन श्रीधर- II	व.लेप.अ
22.	मुरली कृष्णन यू नायर	व.लेप.अ
23.	के.प्रकाश	व.लेप.अ
24.	ए.सुधा	व.लेप.अ
25.	सी.विजयभास्कर	व.लेप.अ
26.	पी. वन्नियराजा	व.लेप.अ
27.	चित्रा विश्वनाथन	व.लेप.अ
28.	एस.मंगलमबिगई	व.लेप.अ
29.	टी आनंद कुमार	व.लेप.अ
30.	आर उमा- II	व.लेप.अ
31.	लीना मनोहरन	व.लेप.अ
32.	वी.रमेश नायर	व.लेप.अ
33.	एन शिवशक्ति	व.लेप.अ
34.	डी.राजकुमार	व.लेप.अ
35.	वी.श्रीवत्स	व.लेप.अ
36.	एस.सनिल कुमार	व.लेप.अ

कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त

धन्यवाद

Designed by Sanjeev